www.sanjanabharati.com

दिल्ली और गौतम बुद्ध नगर से प्रकाशित। हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड व उत्तराखंड में प्रसारित

facebook.com/Sanjanabharati

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

संजना भारती

RNI No. : DELHIN/2016/70240

आपका भरोसा, हमारी ताकत

2 पूर्वोत्तर भारत पर बांग्लादेश की धमकी...

3 राशा थडानी से अहान पांडे तक...

4 पीएम विश्वकर्मा योजना से कारीगरों और...

वर्ष: 10 | अंक: 63 | दिल्ली, शुक्रवार, 26 दिसम्बर 2025 | पृष्ठ संख्या: 4 | मूल्य: 1 रुपया

संक्षिप्त समाचार

नक्सलवाद से मुक्ति की दहलीज पर खड़ा है ओडिशा-अमित शाह

ओडिशा (एजेन्सी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने गुरुवार को कहा कि ओडिशा के कंधमाल जिले में एक बड़े अभियान में छह नक्सलियों को मार गिराए जाने के बाद भारत को नक्सल मुक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल हुई है। X पर एक पोस्ट में इस घटनाक्रम को उजागर करते हुए शाह ने कहा कि यह अभियान वामपंथी उग्रवाद के खिलाफ लड़ाई में एक बड़ी सफलता है और ओडिशा को नक्सलवाद से पूर्ण रूप से मुक्त होने के करीब लाता है। शाह ने कहा कि नक्सल मुक्त भारत की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि। ओडिशा के कंधमाल में एक बड़े अभियान में केंद्रीय समिति के सदस्य गणेश उइके सहित छह नक्सलियों को मार गिराया गया है। शाह ने आगे कहा कि इस सफलता के साथ, ओडिशा नक्सलवाद के पूर्ण उन्मूलन की दहलीज पर खड़ा है। केंद्र के संकल्प को दोहराते हुए केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि सरकार देश से नक्सलवाद को जड़ से खत्म करने के लिए दृढ़ संकल्पित है। शाह ने कहा, "हम 31 मार्च, 2026 से पहले नक्सलवाद को खत्म करने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं।"

अब सैनिक चला सकेंगे इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया ऐप्स

नई दिल्ली (एजेन्सी)। भारतीय सेना ने सैनिकों और अधिकारियों के लिए सोशल मीडिया के इस्तेमाल के नियमों में बड़ा बदलाव किया है। सूत्रों के मुताबिक, अब सेना के जवानों को इंस्टाग्राम इस्तेमाल करने की इजाजत दे दी गई है, लेकिन इसके साथ कुछ सख्त शर्तें भी जोड़ी गई हैं। नए निदेर्शों के अनुसार, सैनिक अब सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म (जैसे इंस्टाग्राम और फेसबुक) का इस्तेमाल केवल जानकारी जुटाने और कंटेंट देखने के लिए कर सकते हैं। सैनिक किसी भी पोस्ट पर लाइक, कमेंट या अपना कंटेंट पोस्ट नहीं कर सकते। जवानों को सोशल मीडिया पर गुमराह करने वाले या फर्जी पोस्ट को अपने सीनियर अधिकारियों को रिपोर्ट करने की अनुमति होगी। डिजिटल एक्टिविटी पर बाकी सभी पुराने सुरक्षा नियम और प्रोटोकॉल पहले की तरह ही लागू रहेंगे। हाल ही में 'चाणक्य डिफेंस डायलॉग' में सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने स्मार्टफोन की जरूरत पर खुलकर बात की।

बिहार के समस्तीपुर में भाजपा सदस्य की गोली मारकर हत्या, थानाध्यक्ष निलंबित

समस्तीपुर (एजेन्सी)। बिहार के समस्तीपुर जिले में एक भाजपा सदस्य की कथित तौर पर गोली मारकर हत्या कर दी गई। पुलिस ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। पुलिस के अनुसार, मृतक की पहचान रूपक साहनी के रूप में हुई है। बुधवार की शाम वह खानपुर थाना क्षेत्र के शादीपुर स्थित अपनी दुकान में मौजूद थे, तभी एक एसयूवी से आए हथियारबंद बदमाशों ने उन पर अंधाधुंध गोली चलाई, जिससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस ने एक बयान में कहा कि इस घटना का कारण पुरानी रंजिश को माना जा रहा है। घटना के बाद कर्तव्य में लापरवाही बरतने के आरोप में खानपुर थानाध्यक्ष रंजीत कुमार चौधरी को निलंबित कर दिया गया है। समस्तीपुर के पुलिस अधीक्षक अरविंद प्रताप सिंह ने बताया कि हत्या के मामले में अब तक दो लोगों को गिरफ्तार किया गया है। उन्होंने कहा, अन्य आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी जारी है और उन्हें भी जल्द पकड़ लिया जाएगा। मृतक के परिजनों ने आरोप लगाया कि रूपक साहनी को जान से मारने की धमकियां मिल रही थीं और उन्होंने पुलिस में शिकायत भी दर्ज कराई थी, लेकिन पुलिस की ओर से कोई कार्रवाई नहीं की गई।

प्रधानमंत्री मोदी ने उत्तर प्रदेश के लखनऊ में राष्ट्र प्रेरणा स्थल का किया उद्घाटन

सबका प्रयास ही विकसित भारत के संकल्प को सिद्ध करेगा: मोदी

संजना भारती/पीआईबी

लखनऊ। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उत्तर प्रदेश के लखनऊ में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के जीवन और आदर्शों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए राष्ट्र प्रेरणा स्थल का उद्घाटन किया। प्रधानमंत्री ने श्री अटल बिहारी वाजपेयी की 101वीं जयंती के पर अपने संबोधन में कहा कि आज लखनऊ की धरती एक नई प्रेरणा की साक्षी बन रही है। उन्होंने देश और पूरी दुनिया को क्रिसमस की शुभकामनाएं दीं। श्री मोदी ने इस बात पर प्रकाश डाला कि भारत में भी लाखों ईसाई परिवार आज यह त्यौहार मना रहे हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि क्रिसमस का यह उत्सव सभी के जीवन में खुशियां लाए, यही हम सबकी सामूहिक कामना है।

श्री मोदी ने इस बात पर प्रकाश डाला कि 25 दिसंबर राष्ट्र के दो महान व्यक्तित्वों की जयंती का विशेष अवसर लेकर आता है। उन्होंने कहा कि भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी और भारत रत्न महामना मदन मोहन मालवीय जी ने भारत की पहचान, एकता और गौरव की रक्षा के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि इन दोनों महान विभूतियों ने अपने विशाल योगदान से राष्ट्र निर्माण पर अमिट छाप छोड़ी है।

मोदी ने इस बात का उल्लेख किया कि 25 दिसंबर महाराजा बिजली पासी जी की जयंती भी है। उन्होंने बताया कि लखनऊ का प्रसिद्ध बिजली पासी किला यहाँ से कुछ ही दूरी पर स्थित है। प्रधानमंत्री ने इस बात पर बल दिया कि महाराजा बिजली पासी ने वीरता, सुशासन और समावेशिता की ऐसी विरासत छोड़ी है जिसे पासी समुदाय ने गर्व से आगे बढ़ाया है। उन्होंने इस संयोग का जिक्र किया कि अटल जी ने ही वर्ष 2000 में महाराजा बिजली पासी के सम्मान में डाक टिकट जारी किया था। उन्होंने महामाना मालवीय जी, अटल जी और महाराजा बिजली पासी को सम्मानपूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री मोदी ने कहा कि कुछ समय पहले उन्हें राष्ट्र प्रेरणा स्थल का उद्घाटन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जो भारत को आत्मसम्मान, एकता और सेवा का मार्ग दिखाने वाले दृष्टिकोण का प्रतीक है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पंडित दीन दयाल उपाध्याय जी और अटल बिहारी वाजपेयी जी की भव्य प्रतिमाएं गौरवशाली हैं, लेकिन उनसे मिलने वाली प्रेरणा कहीं अधिक महान है। अटल जी के शब्दों का हवाला देते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि यह राष्ट्र प्रेरणा स्थल यह संदेश देता है कि हर कदम, हर प्रयास राष्ट्र निर्माण के लिए समर्पित होना चाहिए और केवल सामूहिक प्रयास से ही विकसित भारत का संकल्प पूरा होगा। उन्होंने लखनऊ, उत्तर प्रदेश और पूरे देश को इस आधुनिक प्रेरणा स्थल के लिए बधाई दी। श्री मोदी ने बताया कि जिस भूमि पर यह प्रेरणा स्थल बनाया गया है, उस पर दशकों से 30 एकड़ से अधिक क्षेत्र में कचरे का ढेर लगा हुआ था, जिसे पिछले तीन वर्षों में पूरी तरह से साफ कर दिया गया है। प्रधानमंत्री ने परियोजना से जुड़े सभी श्रमिकों, कारीगरों और योजनाकारों को बधाई दी और मुख्यमंत्री तथा उनकी पूरी टीम के प्रयासों की विशेष सराहना की।

प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर देते हुए कहा कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने राष्ट्र को दिशा देने में निर्णायक भूमिका निभाई। उन्होंने यह भी कहा कि भारत में दो संविधान, दो प्रतीक चिन्ह और दो प्रधानमंत्रियों के प्रावधान को डॉ. मुखर्जी ने ही समाप्त करने की बात शुरू की थी।

अंत्योदय एवं आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में अटल कैंटीन ऐतिहासिक पहल: इन्द्राज

अटल जी ने भारत को 21वीं सदी के लिए किया तैयार

संजना भारती संवाददाता

नई दिल्ली। अंत्योदय संकल्प की दिशा में यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में, भारत रत्न एवं पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की जयंती एवं जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर दिल्लीवासियों को अटल कैंटीन का उपहार मिला है। यह गरीब, मजदूर एवं निम्न आय वर्ग के पोषण और जीवन स्तर को सुधारने की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल है। यह बात दिल्ली सरकार के समाज कल्याण मंत्री रविन्द्र इन्द्राज सिंह ने गुरुवार को बवाना के ए-ब्लॉक एसआरएस/जे जे कॉलोनी एवं सी-ब्लॉक, शाहबाद डेयरी में स्थानीय निवासियों के साथ अटल कैंटीन के शुभारम्भ के अवसर पर कही।

समाज कल्याण मंत्री ने अटल कैंटीन में स्वयं भोजन परोसते हुए भोजन की गुणवत्ता परखी और भोजन कर रहे लोगों से फीडबैक भी लिया। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि माननीय मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता जी के स्पष्ट निर्देश हैं कि भोजन की गुणवत्ता से किसी भी प्रकार का समझौता न हो। पाँच रुपये की थाली में भरपूर पोषण सुनिश्चित किया जाए और इस पर निरंतर निगरानी रखी जाए।

इस अवसर पर समाज कल्याण मंत्री ने ठंड से बचाव के लिए गरीब परिवारों को कंबल का वितरण भी किया। उन्होंने उपस्थित लोगों से कहा कि दिल्ली सरकार गरीब परिवारों, मजदूरों एवं निम्न आय वर्ग के शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण का समग्र रूप से ध्यान रख रही है। सरकार स्कूलों में बेहतर शिक्षा, आयुष्मान आरोग्य योजना के तहत स्वास्थ्य बीमा, आरोग्य मंदिरों में निःशुल्क दवा एवं जांच, पोषण किट के वितरण के साथ-साथ अब अटल कैंटीन के माध्यम से सस्ता और पौष्टिक भोजन भी उपलब्ध करा रही है। समाज कल्याण मंत्री ने कहा कि दिल्ली सरकार अटल जी और डॉ. अम्बेडकर जी के सपनों को प्राथमिकता के आधार पर पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने इस अवसर पर भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी को नमन करते हुए कहा कि तीन बार देश का नेतृत्व करने के साथ-साथ अटल जी ने भारत को 21वीं सदी के लिए तैयार करने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई। उनके नेतृत्व में विश्व की सबसे बड़ी सड़क परियोजना में से एक प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना शुरू हुई, भारत पहली बार एक पूर्ण विकसित परमाणु शक्ति संपन्न देश बना, टेलिकॉम क्रांति और इन्टरनेट के जरिये डिजिटल भारत की आधारशिला रखी गई एवं शिक्षा मूल अधिकार बना। अटल जी ने संसद में राजनीतिक शुचिता की ऐसी लकीर खींची जो हमेशा पक्ष और विपक्ष को संसदीय व्यवहार की प्रेरणा देगी।

हरियाणा में भव्य रूप से मनाया गया सुशासन दिवस

संजना भारती संवाददाता

चंडीगढ़। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने पारदर्शी, जवाबदेह और नागरिक-केंद्रित प्रशासन के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को दोहराते हुए मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि सुशासन एक विकसित भारत और एक विकसित हरियाणा बनाने के लिए सबसे मजबूत स्तंभ है। राज्य सरकार अपनी सेवाओं को एक मिशन के रूप में ले रही है और हम ऐसा हरियाणा बनाने के लिए संकल्पबद्ध हैं, जहां न्याय सुलभ हो, सेवा त्वरित हो और हर नागरिक सशक्त हो, यही सच्चा सुशासन है।

मुख्यमंत्री गुरुवार को पंचकूला में आयोजित राज्य-स्तरीय सुशासन दिवस समारोह को संबोधित कर रहे थे। श्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि हर साल की तरह आज भी पूरे राज्य में 'सुशासन दिवस' मनाया जा रहा है। पंचकूला के इस राज्य स्तरीय समारोह सहित सभी 23 जिलों में कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। इसके अलावा, आधिकारिक रूप से दो दिन पहले ही बने नए जिले हांसी में भी आज सुशासन दिवस का भव्य कार्यक्रम हो रहा है। 23वें जिले का गठन इसलिए किया है, ताकि लोगों को अपने प्रशासनिक कार्यों के लिए दूर न जाना पड़े और उस क्षेत्र का तेजी से विकास हो।

मुख्यमंत्री ने पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी और महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी के राष्ट्र को समर्पित जीवन और उनकी अमूल्य सेवाओं को याद करते हुए दोनों महान विभूतियों को नमन किया। उन्होंने कहा कि सुशासन दिवस भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के आदर्शों व सिद्धांतों की याद दिलाता है। उनके लिए सत्ता सेवा का माध्यम थी और शासन जन-कल्याण का पर्याय था। उन्होंने अपने चिंतन, कर्मों और दूरदर्शिता से भारत को नई दिशा और पहचान दी। उन्होंने भारत को सशक्त बनाने के लिए सशक्त नीतियों की नींव रखी। इससे उस विकसित भारत के निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ, जिसका संकल्प प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने लिया है। श्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि बुधवार को ही केंद्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह ने पंचकूला में भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की प्रतिमा का अनावरण किया। साथ ही, उनके जीवन पर आधारित कॉफी टेबल बुक का विमोचन और रक्तदान शिविर का उद्घाटन करके उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दी है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि महापुरुषों के विचारों से प्रेरित होकर, आज हम एक ऐसे 'विकसित भारत-विकसित हरियाणा' के निर्माण के लिए अग्रसर हैं, जहां शासन पारदर्शी हो, निर्णय समयबद्ध हों और नागरिक कल्याण नीतियों के केंद्र में हों। उन्होंने कहा कि सुशासन का मूल उद्देश्य केवल नियम-कानून बनाना नहीं है, बल्कि आम नागरिक के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाना है। जब सरकार की योजनाएं अंतिम पंक्ति में खड़े अंतिम व्यक्ति तक पहुंचती हैं।

केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल और मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने अटल कैंटीन का किया उद्घाटन

कोई भी भूखा न रहे, यही सुशासन की पहचान: रेखा गुप्ता

संजना भारती संवाददाता

नई दिल्ली। पूर्व प्रधानमंत्री एवं भारत रत्न श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी की 101वीं जयंती के पावन अवसर पर दिल्ली में अटल कैंटीनों का भव्य शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर माननीय केंद्रीय ऊर्जा तथा आवासन एवं शहरी कार्य मंत्री श्री मनोहर लाल व मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता ने नेहरू नगर, लाजपत नगर स्थित अपना बाजार के निकट अटल कैंटीन का उद्घाटन किया।

उद्घाटन समारोह में दिल्ली सरकार के कैबिनेट मंत्री आशीष सूद, विधायक श्री तरविन्दर सिंह मारवाह सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे। यह योजना दिल्ली के श्रमिकों, गरीबों और जरूरतमंद नागरिकों को मात्र 5 रुपये में पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रारंभ की गई है।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने उपस्थित मंत्रियो व गणमान्य अतिथियों के साथ अटल कैंटीन में भोजन ग्रहण किया तथा संबंधित अधिकारियों को भोजन की गुणवत्ता और स्वच्छता सुनिश्चित करने के स्पष्ट निर्देश भी दिए। इस अवसर पर केंद्रीय ऊर्जा एवं आवासन और शहरी कार्य मंत्री श्री मनोहर लाल ने कहा कि सेवा, सुशासन और मानवीय संवेदनाओं के जीवंत प्रतीक श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी की जयंती के अवसर पर दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में दिल्ली सरकार द्वारा शुरू की गई अटल कैंटीन एक ऐतिहासिक पहल है। उन्होंने बताया कि यह अभिनव पहल केवल एक योजना नहीं है, बल्कि समाज की अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक सम्मानपूर्वक सहायता पहुंचाने का एक मजबूत संकल्प है। इस योजना के तहत मात्र 5 रुपये में पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराकर जनसेवा की भावना को सशक्त किया जा रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण के मंत्र को आत्मसात करते हुए यह पहल सुनिश्चित करेगी कि दिल्ली में किसी को भूखा न रहना पड़े। उन्होंने विशेष रूप से मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता को इस महत्वपूर्ण पहल के सफल क्रियान्वयन के लिए बधाई दी।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता ने कहा कि दिल्ली सरकार द्वारा दिल्ली शहरी आश्रय सुधार बोर्ड के माध्यम से शुरू की गई यह योजना माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की उस सोच को साकार करती है, जिसमें उन्होंने कहा था कि समाज ऐसा होना चाहिए जहां कोई भी भूखा न रहे और छोटा-बड़ा भेदभाव से ऊपर उठकर सभी लोग साथ मिलकर रहें। उन्होंने कहा कि अटल कैंटीन योजना गरीब और मेहनतकश नागरिकों को सम्मान, समानता और गरिमापूर्ण जीवन प्रदान करने की दिशा में एक सशक्त पहल है। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह अवसर भारत रत्न एवं पूर्व प्रधानमंत्री श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी की जन्म जयंती का ऐतिहासिक दिन है। श्री अटल बिहारी वाजपेयी एक युगपुरुष थे, जिन्होंने अपने सुशासन से देश को नई दिशा दी और करोड़ों नागरिकों के हृदय में विशेष स्थान बनाया।

मुख्यमंत्री ने जानकारी दी कि दिल्ली सरकार द्वारा राजधानी में 100 अटल कैंटीन शुरू की जा रही है। इनमें से 45 अटल कैंटीन का आज वर्चुअल उद्घाटन किया गया है, जबकि शेष 55 कैंटीन आगामी 15 से 20 दिनों में प्रारंभ की जाएंगी। उन्होंने स्पष्ट किया कि अटल कैंटीन में श्रमिकों, जरूरतमंदों और झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले नागरिकों को 5 रुपये में भोजन उपलब्ध कराया जाएगा। उन्होंने बताया कि 5 रुपये का प्रतीकात्मक योगदान इसलिए रखा गया है ताकि लाभार्थियों के स्वाभिमान को ठेस न पहुंचे, भोजन सम्मान के साथ ग्रहण किया जाए और खाद्य अपव्यय को रोका जा सके।

दिल्ली के कैबिनेट मंत्री श्री आशीष सूद ने कहा कि आज का दिन अत्यंत विशेष है, क्योंकि यह भारत रत्न एवं पूर्व प्रधानमंत्री श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी की जन्मजयंती का अवसर है। उन्होंने बताया कि इस पावन दिन पर अटल कैंटीन की शुरूआत अटल जी को सच्ची श्रद्धांजलि है। श्री सूद ने कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी जी का जीवन सुशासन के वास्तविक मानदंड सिखाता है, जहां सत्ता से अधिक संवेदना और शक्ति से अधिक करुणा का महत्व होता है।

मोहाली में 13-15 मार्च तक आयोजित होगा प्रोग्रेसिव पंजाब निवेशक सम्मेलन-2026

संजना भारती संवाददाता

चंडीगढ़। कैबिनेट मंत्री संजीव अरोड़ा ने कहा कि आप सरकार के सत्ता में आने के बाद अब तक पंजाब राज्य में 1.50 लाख करोड़ रुपये (लगभग 19 बिलियन अमेरिकी डॉलर) का निवेश हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप पूरे राज्य में 5 लाख से अधिक रोजगार के अवसर पैदा हुए हैं। उन्होंने कहा कि ये परिणाम पंजाब को निवेशकों के लिए एक पसंदीदा गंतव्य और अग्रणी औद्योगिक हब बनाने के प्रति राज्य सरकार की दृढ़ प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।

उन्होंने आगे बताया कि पिछले 5 महीनों के दौरान पंजाब में एच.पी.सी.एल. मित्तल एनर्जी लिमिटेड द्वारा 2,600 करोड़ रुपये, वर्धमान स्टील्स द्वारा 3,000 करोड़ रुपये, ट्राइडेंट ग्रुप द्वारा 2,000 करोड़ रुपये, आई.ओ.एल. केमिकल्स एंड फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड द्वारा 1,400 करोड़ रुपये, हैप्पी फोर्जिंग्स लिमिटेड द्वारा 1,000 करोड़ रुपये, वेरका बेवरेजेज प्राइवेट लिमिटेड द्वारा 987 करोड़ रुपये, फोर्टिस हेल्थकेयर (मोहाली) द्वारा 900 करोड़ रुपये, अंबर एंटरप्राइजेज इंडिया लिमिटेड द्वारा 500 करोड़ रुपये, इंफोसिस लिमिटेड द्वारा 285 करोड़ रुपये तथा टोपन स्पेशलिटी फिल्म्स प्राइवेट लिमिटेड द्वारा 300-400 करोड़ रुपये के प्रमुख निवेशों की घोषणा की गई है।

भविष्य की योजनाओं के बारे में जानकारी देते हुए उद्योग मंत्री ने कहा कि 6वां पंजाब प्रोग्रेसिव इन्वेस्टर समिट-2026 मोहाली में 13 से 15 मार्च 2026 तक आयोजित किया जाएगा, जिससे राज्य में उद्योग-अनुकूल वातावरण के निर्माण को बड़ा प्रोत्साहन मिलेगा। उन्होंने कहा कि हाल ही में मुख्यमंत्री द्वारा जापान और दक्षिण कोरिया के टोक्यो, ओसाका और सियोल के दौरे भी सफल रहे हैं और इससे कई नए निवेश आने की उम्मीद है, जिससे विदेशी उद्यमियों के लिए नए अवसर खुलेंगे। निवेश को और अधिक सुविधाजनक बनाने के लिए राज्य सरकार द्वारा सभी औद्योगिक अनुमतियां 5 से 45 दिनों के भीतर प्रदान की जा रही हैं।

उन्होंने आगे कहा कि भारत सरकार द्वारा बिजनेस रिफॉर्म्स एक्शन प्लान (बी.आर.ए.पी.)-2024 के अंतर्गत पंजाब को टॉप अचीवर का दर्जा दिया गया है। उद्योगों और व्यापारियों को बड़ी राहत देते हुए राज्य ने कुल ऋण राशि पर एकमुश्त 0.25 प्रतिशत स्टांप ड्यूटी लागू की है, जिसमें सभी संबंधित खर्च शामिल होंगे तथा इसकी अधिकतम सीमा 5 लाख रुपये निर्धारित की गई है। इसके अतिरिक्त, इक्विटेबल मॉर्गेज पर रजिस्ट्रेशन शुल्क को 1,00,000 रुपये से घटाकर 1,000 रुपये कर दिया गया है।

पंजाब राइट टू बिजनेस एक्ट, 2020 में किए गए संशोधनों के परिणामस्वरूप अब 5 से 18 दिनों के भीतर सैद्धांतिक अनुमतियां जारी की जा रही हैं और पात्र उद्यमी स्व-घोषणा के माध्यम से अपना व्यवसाय शुरू या उसका विस्तार कर सकते हैं। इस संबंध में लगभग 2,000 इकाइयों को पहले ही ऐसी अनुमतियां प्रदान की जा चुकी हैं। अनुमोदित जोन में स्टैंड-अलोन उद्योगों से संबंधित आवश्यकताओं को समाप्त करते हुए सी.एल.यू. प्रक्रिया को भी सरल बनाया गया है।

मुखिया ने निजी खर्च से किया कंबल का वितरण

एसबी ब्यूरो

मंसूरचक(बेगूसराय)। प्रखंड क्षेत्र के समसा-दो पंचायत के मुखिया मो. इजहार अंसारी ने गुरुवार को जरूरतमंदों के बीच 700 कंबल वितरण किया। कंबल वितरण समारोह में मुखिया ने पंचायत के विभिन्न गांवों के सात सौ गरीबों को कंबल मुहैया कराया। इस संबंध में मुखिया मो.इजहार अंसारी ने कहा कि पीड़ित मानवता की सेवा से बड़ा कोई धर्म नहीं है। उन्होंने कहा कि विगत 16 साल से लगातार पंचायत के वैसे असहाय व निर्धन परिवार के बीच कंबल का वितरण करते हैं। जिनके पास इस कंपकपाती ठंड में भी तन ढकने के लिए सही से कपड़े नहीं रहते हैं। उन्होंने कहा कि हम हमेशा पूरी सादगी ढंग से कंबल वितरण का कार्यक्रम करते हैं लेकिन यह कंबल जरूरतमंदों तक पहुंचे इसके लिए पूर्व से ही तैयारी करते हैं और क्षेत्र में घूम घूम कर वैसे लोगों की सूची बनाते हैं जो पूरी तरह लाचार व

वेवश हों। मुखिया ने कहा कि ऐसा कर हमें काफी आत्म संतुष्टि मिलती है। क्योंकि साधन संपन्न लोग तो अपने संसाधनों से गर्म कपड़े व कंबल जुटा लेते हैं लेकिन गरीब तबके के लिए एक अदद कंबल खरीदने के लिए काफी परेशानी झेलनी पड़ती है। इस अवसर पर मुमताज बानो, महबूब अंसारी, मुखिया कुकन राय, विपिन चौधरी, राकेश राय पंकज कुमार, उप मुखिया आशा देवी, सुशील कुमार पासवान, अनिल यादव, अशोक कैब राम निहोरा राय, सुरेश चौधरी, जयमंगल यादव सहित कई अन्य मौजूद थे।

सम्पादकीय

विलंबित न्याय...

'विलंबित न्याय, न्याय से वंचित होने के समान है', काफी प्रचलित मुहावरा है। मगर न्याय देकर छीनने को क्या कहा जाए, इसके लिए भी कोई जुमला गढ़ने की जरूरत है। जिस तरह उन्नाव बलात्कार मामले के दोषी कुलदीप सिंह सेंगर को मिली उम्रकैद की सजा निलंबित की गई है और ऊपर से जमानत भी दे दी गई है, उसके बाद ऐसा ही लग रहा है कि न्याय के नाम पर क्या पीड़िता के साथ छलावा हुआ है। जैसे सीताजी की अग्निपरीक्षा लेने के बाद भी उनका परित्याग श्री राम ने किया था, जिसके बाद आखिरकार उन्हें धरती की शरण में ही जाना पड़ा, उसी तरह उन्नाव बलात्कार कांड की पीड़िता को नाइंसाफी से गुजरना पड़ रहा है। कायदे से तो जिस महिला पर उत्पीड़न हुआ है, उसकी न कोई परीक्षा लेनी चाहिए, न उसे किसी शर्मिंदगी का एहसास कराया जाना चाहिए। लेकिन समाज ऐसा ही है, जो बलात्कार पीड़िता को लगातार ये याद दिलाता है कि उसकी इज्जत अब छीन ली गई है, वह समाज में सिर उठाकर जीने लायक नहीं है। जबकि सिर झुकाकर सजा भोगने का काम अपराधी का होता है। दुख की बात ये है कि इस बार अपराधी न्यायालय के आदेश से सलाखों के बाहर आया है। हालांकि सबने देखा है कि उसे सलाखों के पीछे डालने में कितना वक्त और कितनी ताकत लगी। उप्र के उन्नाव जिले में 11 से 20 जून 2017 के बीच एक नाबालिक लड़की को अगवा कर बलात्कार के गंभीर आरोप विधायक कुलदीप सिंह सेंगर पर लगे थे। लेकिन सेंगर को गिरफ्तार करने में साल भर का वक्त लग गया। क्योंकि स्थानीय पुलिस सेंगर और उसके साथियों को बचाने में लगी थी। इस बीच पीड़िता के पिता पर सेंगर के लोगों की शिकायत पर आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज कर उन्हें गिरफ्तार किया गया, जिसमें हिरासत में ही उनकी मौत हुई। उत्पीड़ना का ये सिलसिला यहीं नहीं थमा, फरवरी 2018 में सेंगर को गिरफ्तार तो किया गया, लेकिन 2019 में पीड़िता अपने रिश्तेदारों और वकील के साथ जिस कार में जा रही थी, उसे एक बिना नंबर प्लेट की ट्रक ने ठोकर मारी, जिसमें पीड़िता की दो महिला रिश्तेदारों की मौत हो गई, जो इस केस में अहम गवाह भी थीं। इसमें पीड़िता की जान बच गई। 28 जुलाई 2019 की इस सड़क दुर्घटना के बाद 29 जुलाई 2019 को सेंगर और नौ अन्य के खिलाफ एफआईआर दर्ज हुई। फिर 30 जुलाई को पीड़िता का भारत के मुख्य न्यायाधीश को लिखा पत्र सार्वजनिक हुआ। 31 जुलाई को सर्वोच्च न्यायालय ने पत्र का स्वतः संज्ञान लिया। 1 अगस्त को सुप्रीम कोर्ट ने मामले से जुड़े पांच केस दिल्ली स्थानांतरित करने का आदेश दिया। 20 दिसंबर 2019 को ट्रायल कोर्ट ने सेंगर को आजीवन कारावास और 25 लाख रुपये जुमार्ने की सजा सुनाई गई। अदालत ने यह भी निर्देश दिया कि सीबीआई पीड़िता और उसके परिवार के जीवन और स्वतंत्रता की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त कदम उठाए। इसमें जरूरत पड़ने पर सुरक्षित आवास और पहचान बदलने की व्यवस्था भी शामिल हो। लेकिन छह साल पहले जिसे पीड़िता के लिए न्याय समझा जा रहा था, उसे पलटते हुए अब दिल्ली हाई कोर्ट की एक बेंच ने मंगलवार 23 दिसंबर को सेंगर की सजा निलंबित कर दी है। जस्टिस सुब्रमण्यम प्रसाद और जस्टिस हरीश वैद्यनाथन की बेंच ने पूर्व विधायक को 15 लाख रुपये के निजी मुचलके और समान राशि के तीन जमानतदार पेश करने का निर्देश दिया। जमानत की कुछ शर्तें भी हैं, जैसे सेंगर को दिल्ली में ही रहना होगा, हर सोमवार पुलिस के सामने रिपोर्ट करना होगा और पीड़िता जहां भी हो, उसके पांच किलोमीटर के दायरे में फटकना नहीं होगा। अदालत ने कहा, किसी भी शर्त के उल्लंघन की स्थिति में जमानत (सजा निलंबन) रद्द कर दी जाएगी। अब ये पता नहीं कि सेंगर को पीड़िता से दूर रखने के लिए पांच किमी की माप जोख हर बार कैसे की जाएगी। अदालत को इस पहलू पर भी विचार करना चाहिए था कि सेंगर जैसे लोग अपने राजनैतिक रसूख का इस्तेमाल कर जब पुलिस-प्रशासन को अपने इशारों पर नचा सकते हैं तो खुद न सही किसी और के जरिए पीड़िता के पास तक पहुंचने या उसे डराने-धमकाने से कैसे रोका जा जाएगा। यह महज संयोग नहीं थे कि पीड़िता के पिता की हिरासत में मौत हुई और बाद में उसकी गाड़ी को भी ट्रक से कुचलने की कोशिश हुई। यह रसूखदार व्यक्ति को बचाने की खतरनाक साजिश लगती है। लेकिन कुलदीप सेंगर को जमानत देकर, उसकी उम्रकैद निलंबित कर पीड़िता के लिए खतरे बढ़ा दिए गए हैं। गौरतलब है कि सेंगर की सजा निलंबित होने के कुछ ही घंटों बाद पीड़िता, उनकी मां और महिला अधिकार एक्टिविस्ट योगिता भयाना ने मंगलवार को इंडिया गेट पर विरोध प्रदर्शन किया। लेकिन पुलिस ने यहां भी उन्हीं को प्रताड़ित किया और जबरन धरने से उठा दिया। पीड़िता ने आरोप लगाया कि 2027 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों को देखते हुए सेंगर को जमानत दी गई है। ताकि उनकी पत्नी चुनाव लड़ सकें। उन्होंने सवाल उठाया कि, 'अगर ऐसे आरोपों वाला व्यक्ति बाहर रहेगा तो उनकी सुरक्षा कैसे सुनिश्चित होगी।' पीड़िता ने यह कहते हुए जमानत रद्द करने की मांग भी की कि सेंगर की रिहाई के बाद वह 'डरी हुई हैं।' उन्होंने न्यायपालिका में भरोसा जताते हुए कहा कि वे इस मामले में सर्वोच्च न्यायालय का रुख भी करेंगी। अब देखना होगा कि यह मामला सुप्रीम कोर्ट में किस तरह टिकता है और यहां से न्याय की उम्मीद जागती है या फिर एक लौ बुझती है।

जयंती

ऊधम सिंह

जन्म: 26 दिसंबर, 1899, सुनाम गाँव, पंजाब; शहादत: 31 जुलाई, 1940, पेंटनविले जेल, ब्रिटेन) भारत की आजादी की लड़ाई में अहम योगदान करने वाले पंजाब के महान क्रान्तिकारी थे। अमर शहीद ऊधम सिंह ने 13 अप्रैल, 1919 ई. को पंजाब में हुए भीषण जलियाँवाला बाग हत्याकांड के उत्तरदायी माइकल ओ'डायर की लंदन में गोली मारकर हत्या करके निर्दोष भारतीय लोगों की मौत का बदला लिया था।

पुण्यतिथि

यशपाल

जन्म-3 दिसम्बर, 1903 ई., फिरोजपुर छावनी; मृत्यु-26 दिसंबर, 1976, हिन्दी के यशस्वी कथाकार और निबन्ध लेखक हैं। यशपाल राजनीतिक तथा साहित्यिक, दोनों क्षेत्रों में क्रान्तिकारी हैं। उनके लिए राजनीति तथा साहित्य दोनों साधन हैं और एक ही लक्ष्य की पूर्ति में सहायक हैं।

कल मिलेंगे

मंदिर में पूजा करते समय गांव की एक लोभी महिला भगवान से बोली...
भगवान, तेरे लिए एक सेकंड कितने वर्षों के बराबर है?
भगवान बोले-करोड़ों साल के बराबर
फिर महिला बोली-और करोंड़ो रुपये कितने बराबर होते हैं?
भगवान बोले-रत्ती बराबर
लालच से महिला बोली-एक रत्ती मुझे भी दे दीजिए
भगवान बोले-एक सेकंड मंदिर में ही रूको, लाकर देता हूं।

संजना भारती दैनिक

भगवान शंकर जी के 11वें रुद्रावतार हनुमान जी (मेंहदीपुर, श्री बाला जी) के संरक्षण में संचालित किया जाता है। समाचार पत्र का यह अंक भी उन्हीं के चरणों में श्रद्धापूर्वक समर्पित है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक-**संजय कुमार** द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-41, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित तथा ए-281सी, गली नं. 3, ए-ब्लॉक, अम्बिका विहार, शिव विहार, दिल्ली-110094 से प्रकाशित। इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत संपादक उत्तरदायी।

RNI No. : DELHIN/2016/70240

Phone No.: 9871221635

E-mail ID: sanjanabharati16@gmail.com

(किसी भी वाद-विवाद में न्याय क्षेत्र दिल्ली ही होगा।)

पूर्वोत्तर भारत पर बांग्लादेश की धमकी-खोखली धमकियां, या कुछ और?

एचआईऔर जेईआईके कट्टरपंथी युवाओं ने 2021 में ही बांग्लादेश में अपने नए हासिल किए गए दबदबे का संकेत दे दिया था। उन्होंने लगातार दो दिनों तक बहुत ज्यादा हिंसक भारत विरोधी प्रदर्शन किया, जिससे भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अपने तय प्रोग्राम कम करने पड़े। जहां तक अवामी लीग की बात है, तो जिन्न बोतल से बाहर निकल चुका था

-आशीष विश्वास

बांग्लादेश में इस्लामी कट्टरपंथियों द्वारा भारत के पूर्वोत्तर इलाके के सात बहनी राज्यों को छीनने का नारा नई दिल्ली के लिए कितना गंभीर है? भारत के लिए इससे जो राजनीतिक चुनौती खड़ी होती है, उसका सही अंदाजा लगाने के लिए, इसकी पृष्ठभूमि की जानकारी का थोड़ा अध्ययनआवश्यक है।

बांग्लादेश ने शेख हसीना के प्रधानमंत्री के तौर पर 2019-24 के कार्यकाल के आखिर में पाकिस्तान के साथ पुराने रिश्ते फिर से बनाने की कोशिश की। इस बीच, इस्लामाबाद में सत्ताधारी सरकार भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में अपने कमजोर गुप्तचर नेटवर्क को बढ़ा रही थी। एक तरह से, पाकिस्तान की पहले से ही पूर्वोत्तर इलाके के पास पकड़ थी। उसकी ताकतवर गुप्तचर संस्था, आईएसआई, ने नेपाल में अपनी मजबूत मौजूदगी बना ली थी। वहीं पर 1999 में इंडियन एयरलाइंस के एक हवाई जहाज को हाईजैक करने की सोची थी और उसे अंजाम दिया गया था।

बांग्लादेश ने तुर्की के साथ अपने राजनयिक रिश्ते भी बेहतर किए थे, जो कश्मीर पर भारत के साथ अपने विवाद में पाकिस्तान का लगातार समर्थक रहा है। अंकारा और ढाका के बीच रिश्ते करीबी थे, क्योंकि दौरे पर आए तुर्की के प्रतिनिधिमंडल और अधिकारियों ने बांग्लादेश में हथियार बनाने के केन्द्र बनाने का सुझाव दिया था। इस बीच, अपने बांग्लादेश में सत्तारूढ़ अवामी लीग (एएल) अपने कथित भ्रष्टाचार और मानवाधिकार उल्लंघन के खराब रिकॉर्ड की वजह से अपनी जमीन खो रही थी, जिससे पश्चिम उससे अलग-थलग पड़ गया था। अवामी लीग को भारत को छोड़कर, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुत कम समर्थन मिला। बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी), जमात-ए-इस्लामी (जेईआई) वगैरह जैसी विरोधी ताकतों के आंदोलन और ज्यादा जोरदार होते जा रहे थे, जिससे उन्हें और समर्थन मिल रहा था।

प्रधानमंत्री के तौर पर, हसीना अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर खुद को अलग-थलग करने के अलावा, बांग्लादेश के अंदर आम लोगों के बीच बढ़ते अलगाव को बर्दाश्त नहीं कर सकती थीं। उन्होंने हिफाजत-ए-इस्लाम (एचआई) जैसे नए उभरते हुए संगठनों को बढ़ावा दिया, जिसका इस्तेमाल उन्होंने बीएनपी को हराने के लिए एक छड़ी की तरह किया! उसमें भारत में अकाली दल को दबाए रखने के लिए जे.एस. भिंडरावाले के उग्रवादी सिखों का समर्थन करने के लिए दिवंगत प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस की झलक थी!

साफ है, सुश्री हसीना ने श्रीमती गांधी की दुखद मौत में छिपे कड़वे राजनीतिक संदेश को गलत समझा- राजनीतिक कट्टरता के साथ खिलवाड़ करने की अदूरदर्शी नीति धर्मनिरपेक्ष सत्ताधारी पार्टियों के लिए लंबे समय तक काम नहीं आई। बांग्लादेश में पहले से ही संकेत बुरे थे- शेख हसीना और अवामी लीग के लिए, 5 अगस्त, 2025 से बहुत पहले से। हिफाजत समर्थक तत्वों ने अवामी लीग सरकार को प्रमुख जगहों से धर्मनिरपेक्ष थीम पर बनी सार्वजनिक मूर्तियों और दीवारों पर बनी पेंटिंग हटाने के लिए मजबूर किया। उन्होंने न्यायपालिका पर दबाव डाला। वे विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में छात्र कार्यकताओं के बीच बड़े पैमाने पर फैले हुए थे, जिससे अवामी लीग से जुड़ी छात्र लीग के लिए खतरा पैदा हो गया।

एचआईऔर जेईआईके कट्टरपंथी युवाओं ने 2021 में ही बांग्लादेश में अपने नए हासिल किए गए दबदबे का संकेत दे दिया था। उन्होंने लगातार दो दिनों तक बहुत ज्यादा हिंसक भारत विरोधी प्रदर्शन किया, जिससे भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अपने तय प्रोग्राम कम करने पड़े। जहां तक अवामी लीग की बात है, तो जिन्न बोतल से बाहर निकल चुका था। भारत विरोधी प्रदर्शनकारियों ने बांग्लादेश पुलिस, उसकी रैपिड एक्शन बटालियन या बीजीबीगार्ड्स की लाचारी को सामने ला दिया था। इसके अलावा, उन्होंने भारत सरकार को भी अपने बढ़ते दबदबे के बारे में बताया। हैरानी की बात है कि ढाका में भारत के प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी को जो सार्वजनिक तौर पर बुरा-भला कहा गया, उस पर भारत सरकार की तरफ से कोई खास प्रतिक्रिया नहीं आयी। बांग्लादेशी विश्लेषकों ने बताया कि ढाका और जिलों में उभरते युवा नेताओं से मिलने वाले पाकिस्तानी एजेंटों ने खुलेआम अपना काम बहुत अच्छे से किया। बांग्लादेश में भारत के पूरे दबदबे को पहली बार चुनौती दी गई थी और नई दिल्ली कुछ खास नहीं कर सकी।

पीछे मुड़कर देखें तो, ढाका और नई दिल्ली दोनों जगह के नीति बनाने वालों को बांग्लादेशी युवाओं में इस्लामी कट्टरता के तेजी से बढ़ते खतरे के सामने उनकी लापरवाही और नाकाबिलियत के लिए बुरा-भला कहा जा सकता है। उन्होंने एशिया और अफ्रीका में उभर रहे नए बड़े राजनीतिक रूझान को नज? अंदाज कर दिया, जिसमें छात्रों और युवाओं ने दूसरे देशों में पश्चिम-प्रायोजित 'कलररेवोल्यूशन' में बड़ी भूमिका निभाई, जिससे एक के बाद एक सत्तारूढ़ सरकारें गिरीं। सत्तारूढ़ पार्टियों के लिए आधारभूत लाइन यह है कि उन्हें राजनीतिक अतिवाद के साथ कोई तालमेल नहीं करना चाहिए, जो ज्यादातर अपने प्रायोजक को ही खा जाता है। हालांकि, यह नहीं मान लेना चाहिए कि बांग्लादेश में डॉ. यूनुस और नेशनल सिटिजन्स पार्टी (एनसीपी) जैसी पार्टियों के रूप में सामने आए नए भारत विरोधी नेताओं और संगठनों ने अपनी मौजूदा शक्ति पहले ही मजबूत कर ली है। यह बिल्कुल भी सही नहीं है। भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र को काटने और पश्चिम बंगाल के कुछ हिस्सों पर कब्जा करने के बारे में उनकी सभी भड़काऊ बातों के बावजूद, भारत के सामने उनकी कोई खास ताकत नहीं है, भले ही वे पाकिस्तान के साथ मिल जाएं। यह जरूरी है कि अब तक चीन द्वारा 'सात बहनी राज्यों को आजाद करने' की बांग्लादेशी अपील पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी गयी है। रूस का कहना है कि बांग्लादेश के साथ संबंध पहले की तरह ही जारी रहेंगे। यूरोपियन यूनियन और अमेरिकी ब्लॉक के देशों की तरफ से कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया नहीं आयी है। खास बात यह है कि बांग्लादेश के अंदर भी किसी बड़े नेता या पार्टी ने भारत से पूर्वोत्तर क्षेत्र के राज्यों को अलग करने की यूनुस की मांग पर टिप्पणी करने की जहमत नहीं उठाई है। दुनिया के बाकी हिस्सों से इस मुद्दे पर पूरी तरह चुप्पी को देखते हुए, यह लगता है कि भारत सरकार को यूनुस की हरकतों को ज्यादा गंभीरता से लेने की जरूरत नहीं है। पूर्वोत्तर भारत के बड़े छात्र और युवा संगठन, जैसे एएएसयू, खासी स्टूडेंट्स यूनियन, एनईएसओऔर एजेवाईसीपी, हमेशा बांग्लादेश से अवैध घुसपैठ का विरोध करते रहे हैं। वे बांग्लादेश से घुसपैठ के खिलाफ बड़े आंदोलनों में सबसे आगे रहे हैं। इसलिए, सही दस्तावेज के साथ भारत (जिसमें पूर्वोत्तर क्षेत्र भी शामिल है!) में यात्रा करने वाले बांग्लादेशियों को छोड़कर, यह कहना गलत नहीं होगा कि संदिग्ध गैर-अप्रवासी बांग्लादेशी आम तौर पर यहां के आम लोगों में शक और अविश्वास पैदा करते हैं,जिसे बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार डॉ. यूनुस को ध्यान रखना चाहिए।

इतिहास को तोड़मरोड़ कर मोदी का गांधी पर भी हमला

देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और मुख्य विपक्षी पार्टी कांग्रेस की आलोचना व निंदा करने का तो मोदी पर मानों जुनून सवार रहता है। इस सिलसिले में जो मुंह में आता है वह बोल जाते हैं। ऐसा करने में वे इस बात की भी परवाह नहीं करते हैं कि उनकी अशोभनीय गलतबयानी से देश-दुनिया में उनकी खिल्ली उड़ेगी और लोग उनकी पढ़ाई-लिखाई व उनकी मानसिक स्थिति पर सवाल उठाएंगे

-अनिल जैन

राजनेता के तौर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भले ही एक कामयाब मजमा जुटाऊ भाषणबाज के तौर पर 'विख्यात' हों, लेकिन उन पर यह 'आरोप' कतई नहीं लग सकता है कि वे आमतौर पर एक शालीन और गंभीर वक्ता हैं! चुनावी रैली हो या संसद, लाल किले की प्राचीर हो या फिर विदेशी धरती, मोदी की भाषण शैली अमूमन एक जैसी रहती है-वही अहंकारयुक्त हाव-भाव, राजनीतिक विरोधियों पर वही छिछले कटाक्ष, वही स्तरहीन मुहावरे। आधी-अधूरी जानकारी के आधार पर गलत बयानी, तथ्यों की मनमाने ढंग से तोड़-मरोड़, सांप्रदायिक तल्खी और नफरत से भरे जुमलों और आत्मप्रशंसा से भरपूर रहते हैं उनके भाषण।

देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और मुख्य विपक्षी पार्टी कांग्रेस की आलोचना व निंदा करने का तो मोदी पर मानों जुनून सवार रहता है। इस सिलसिले में जो मुंह में आता है वह बोल जाते हैं। ऐसा करने में वे इस बात की भी परवाह नहीं करते हैं कि उनकी अशोभनीय गलतबयानी से देश-दुनिया में उनकी खिल्ली उड़ेगी और लोग उनकी पढ़ाई-लिखाई व उनकी मानसिक स्थिति पर सवाल उठाएंगे। भारत का विभाजन, जम्मू-कश्मीर का भारत में विलय, भारत-चीन युद्ध आदि के बारे में तो ऐतिहासिक तथ्यों को तोड़ते-मरोड़ते हुए मोदी कांग्रेस और नेहरू को अक्सर कठघरे में खड़ा करते ही रहते हैं। इसके अलावा भी देश की मौजूदा तमाम समस्याओं के लिए वे नेहरू और कांग्रेस को ही जिम्मेदार ठहराते हैं, बावजूद इसके कि पिछले 11 साल से वे खुद प्रधानमंत्री हैं और अपनी सरकार का पर्याय भी। हद तो यह है कि नेहरू के साथ-साथ अब महात्मा गांधी के नाम से भी उनकी नफरत उजागर होने लगी है।

हाल ही में मोदी ने असम को लेकर एक चौंकाने वाला भाषण दिया है। उन्होंने 20 दिसंबर को गुवाहाटी में एक सभा को संबोधित के दौरान असम के पहले मुख्यमंत्री गोपीनाथ बारदोलोई की तारीफ करते हुए कहा कि 'देश आजाद होने से पहले कांग्रेस ने असम की पहचान मिटाने की साजिश रची गई थी।' यानी इस बार उन्होंने किसी का नाम लिए बगैर नेहरू के साथ-साथ राष्ट्रपिता महात्मा गांधी पर भी निशाना साधा है। गौरतलब है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का महात्मा गांधी से पुराना बैर है। मोदी ने कहा, "जब मुस्लिम लीग और ब्रिटिश हुकूमत भारत को बांटने की जमीन तैयार कर रही थी, उस समय असम को भी पूर्वी पाकिस्तान का हिस्सा बनाने की योजना बनी थी। कांग्रेस भी उस योजना का हिस्सा बनने वाली थी लेकिन बारदोलोई जी ने अपनी ही पार्टी के खिलाफ खड़े होकर असम की पहचान मिटाने की इस कोशिश का जोरदार विरोध किया और असम को भारत से अलग होने से बचाया।"

प्रधानमंत्री ने इतिहास को लेकर मनमानी बयानी की है, इसलिए इतिहास के उस घटनाक्रम की पड़ताल जरूरी हो जाती है और जरूरी हो जाता है यह जानना कि मोदी कितना सच बता रहे हैं? दूसरे विश्व युद्ध के समय और ब्रिटिश प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल की हार के बाद भारत से ब्रिटिश शासकों की वापसी तय मानी जा रही थी। चर्चिल के बाद प्रधानमंत्री बने लॉर्ड एटली ने 1946 में भारत को यथाशीघ्र स्वतंत्रता देने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई और भारतीयों से संविधान बनाने की प्रक्रिया में जुड़ने का आग्रह किया। इसके तहत उन्होंने भारत में तीन सदस्यीय कैबिनेट मिशन (तीन मंत्रियों का मिशन) भेजा ताकि सत्ता हस्तांतरण और भारत की एकता बनाए रखने की योजना तैयार की जा सके। 24 मार्च, 1946 को ब्रिटिश कैबिनेट के तीन मंत्री- लॉर्ड पेथिक लॉरेंस (भारत सचिव), सर स्टैफोर्ड क्रिप्स (बोर्ड ऑफ ट्रेड के अध्यक्ष) और एवी. अलेक्जेंडर (एडमिरल्टी के फर्स्ट लॉर्ड) वायसरॉय लॉर्ड आर्चिबाल्ड वेवेल के साथ भारत आए।

कैबिनेट मिशन ने ब्रिटिश भारत के लिए एक त्रिस्तरीय संवैधानिक ढांचा प्रस्तावित किया- शीर्ष पर फेडरल ढांचा, स्वायत्त प्रांत और बीच में प्रांतों के कुछ समूह। इन समूहों को तीन श्रेणियों में संगठित किया गया था- समूह (ए) उत्तर-पश्चिमी प्रांत पंजाब, सिंध और बलूचिस्तान, समूह (बी) में पूर्वी प्रांत असम और बंगाल तथा समूह (सी) में भारत के शेष मध्य क्षेत्र। इस श्रेणी प्रणाली में असम और बंगाल को एक साथ रखा गया था।

यह भारत को एकजुट रखने की अंतिम कोशिश थी। हालांकि इसमें विरोधाभास थे। कांग्रेस ने सिद्धांत रूप से एक अविभाजित भारत के लिए इस ढांचे का समर्थन किया और मुस्लिम लीग ने भी इसे स्वीकार कर लिया। विवाद का कारण- समूह ए में बंगाल मुस्लिम बहुल था, जबकि असम हिंदू बहुल। मुस्लिम लीग चाहती थी कि पूरा ग्रुप ए बाद में पाकिस्तान का हिस्सा बने। असम के नेताओं को डर था कि बंगाल के साथ जुड़ने पर असम की पहचान और डेमोग्राफी (जनसांख्यिकी) खत्म हो जाएगी। इस प्रस्ताव पर गांधी और नेहरू के विचार- गांधी, नेहरू और कांग्रेस के अन्य नेताओं ने असम के नेताओं को यह योजना अस्वीकार करने की सलाह दी। बोरदोलोई द्वारा भेजे गए दूत बिजयचंद्र भगवती और महेंद्र मोहन चौधरी से महात्मा गांधी ने कहा- "अगर आप सही समय पर सही काम नहीं करेंगे तो असम खत्म हो जाएगा। बोरदोलोई को बताओ कि मुझे जरा भी बेचैनी नहीं है। मेरा मन बना हुआ है। असम को अपनी आत्मा नहीं खोनी चाहिए। उसे पूरी दुनिया के खिलाफ भी इसे बचाना चाहिए। वरना मैं कहूंगा कि असम में केवल पुतले थे, आदमी नहीं।" "यह बेहूदा सुझाव है कि बंगाल किसी भी तरह असम पर हावी हो... लोगों को बताओ कि अगर गांधीजी हमें रोकने की कोशिश भी करें तो भी हम नहीं मानेंगे।" गांधी की यह सलाह 29 दिसंबर, 1946 के 'हरिजन' अखबार में 'गांधीजी की असम को सलाह' शीर्षक से प्रकाशित हुई थी। अब इस ऐतिहासिक तथ्य की रोशनी में प्रधानमंत्री मोदी के बयान को देखा जाए। उन्होंने गांधी और नेहरू पर आरोप लगाया कि वे असम को पाकिस्तान को सौंपना चाहते थे। असम पर जवाहरलाल नेहरू का बयान- असम को जबरन समूहीकरण में डालने का नेहरू ने सख़्त विरोध किया था। उन्होंने 22 जुलाई, 1946 को बारदोलोई को पत्र में लिखा- "समूह के खिलाफ फैसला करना सही और उचित था।" 23 सितंबर, 1946 को लिखा, "किसी भी हालत में हम असम जैसे प्रांत को उसकी इच्छा के खिलाफ कुछ करने के लिए मजबूर करने पर सहमत नहीं होंगे।" अप्रैल, 1946 में बीबीसी को दिए इंटरव्यू में नेहरू ने कहा था- "उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत में मुस्लिम बहुल होने के बावजूद लोगों ने कांग्रेस को वोट दिया है। असम भी स्पष्ट रूप से पाकिस्तान के खिलाफ है।"

10 जुलाई, 1946 को बॉम्बे में प्रेस कॉन्फ्रेंस में नेहरू ने कहा, "बहुत संभावना है कि असम बंगाल के साथ समूहीकरण के खिलाफ फैसला करेगा। मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूं कि अंत में वहां कोई समूहीकरण नहीं होगा, क्योंकि असम इसे किसी भी हालत में बर्दाश्त नहीं करेगा।" नेहरू ने अंग्रेजों की योजना को 'जिन्ना का चेहरा बचाने' की कोशिश माना। असम कांग्रेस कमेटी भी खिलाफ थी असम की प्रांतीय कांग्रेस कमेटी ने भी समूहीकरण (ग्रुप सी प्रस्ताव) को पूरी तरह अस्वीकार कर दिया, क्योंकि डर था कि असम को लीग को खुश करने के लिए मुस्लिम बहुल क्षेत्र से जोड़ दिया जाएगा। इस प्रकार गांधी और नेहरू के साथ ही असम की कांग्रेस कमेटी का भी इस बारे में रूख साफ था। बारदोलोई और मोदी का बयान यह सच है कि कांग्रेस नेता गोपीनाथ बोरदोलोई ने असम को बंगाल के साथ जोड़ने का विरोध किया। उन्होंने योजना का विरोध करने का संकल्प लिया, लेकिन पहले गांधीजी से परामर्श किया और अपने दूतों को उनसे मिलने भेजा। मोदी कह रहे हैं कि बारदोलोई ने अपनी पार्टी के खिलाफ खड़े होकर असम बचाया। तथ्य बता रहे है कि बारदोलोई, गांधी और नेहरू असम के मुद्दे पर एक थे। कांग्रेस के जबरदस्त विरोध के बाद अंग्रेजों ने असम को पाकिस्तान मे मिलाने की योजना को रद्द कर दिया। कैबिनेट मिशन प्लान को कांग्रेस ने पूरी तरह नाकाम कर दिया। इतिहास का यह महत्वपूर्ण घटनाक्रम झुठलाया नहीं जा सकता क्योंकि बातें बहुत पुरानी नहीं हैं। उस समय के अखबार आर्काइव्स में मौजूद हैं। सच यही है कि अगर गांधी, नेहरू, बारदोलोई और कांग्रेस एकजुट होकर विरोध नहीं करते तो असम पाकिस्तान का हिस्सा बन जाता। कुल मिलाकर मोदी ने अपनी आदत के मुताबिक अथवा अपने अज्ञान के चलते ऐतिहासित तथ्यों को छिपाकर उसका एक ही पहलू बताया। इतिहास का सत्य कुछ और है, पीएम मोदी का बयान कुछ और है, जिसका एक अहम संकेत यह भी है कि अब वे नेहरू के साथ-साथ गांधी को भी नहीं बख्शेंगे।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं)

खेल/विदेश/कारोबार/फिल्म

17 साल बाद लौटे तारिक रहमान, बांग्लादेश की राजनीति में 'लोकतंत्र की रक्षा' का नया दांव

(एजेन्सी)।

गुरुवार का दिन खास रहा जब 17 साल बाद बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी के वरिष्ठ नेता तारिक रहमान स्वदेश लौटे। ढाका के हजरत शाहजलाल अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उनके स्वागत के लिए हजारों समर्थक उमड़ पड़े। भारी सुरक्षा के बीच वे अपनी पत्नी जुबैदा और बेटी जैमा के साथ विमान से उतरे और नंगे पांव जमीन पर कदम रखा। बता दें कि तारिक रहमान को बांग्लादेश की राजनीति में एक प्रभावशाली लेकिन विवादित चेहरा माना जाता है। वह पूर्व प्रधानमंत्री खालिदा जिया के बेटे और दिवंगत राष्ट्रपति जियाउर रहमान के पुत्र हैं। लंबे समय से वे लंदन में निर्वासन का जीवन बिता रहे थे और 2018 से बीएनपी के कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में पार्टी का नेतृत्व कर रहे थे।

मौजूद जानकारी के अनुसार, उनकी वापसी ऐसे वक्त हुई है जब देश में अंतरिम सरकार सत्ता में है। अगस्त 2024 में छात्र आंदोलन के बाद प्रधानमंत्री शेख हसीना को सत्ता छोड़नी पड़ी थी, जिसके बाद नोबेल पुरस्कार विजेता मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व में अंतरिम सरकार बनी। इस सरकार ने फरवरी 2026 में आम चुनाव कराने की घोषणा की है। गौरतलब है कि तारिक रहमान की मां और पूर्व प्रधानमंत्री खालिदा जिया इस समय गंभीर रूप से बीमार हैं और नवंबर से अस्पताल में भर्ती हैं। ऐसे में पार्टी और समर्थकों की नजर अब तारिक रहमान पर टिकी है, जिन्हें भावी प्रधानमंत्री के रूप में देखा जा रहा है।

राजनीतिक तौर पर रहमान का सफर विवादों से भी भरा रहा है। 2007 में सैन्य समर्थित सरकार के दौरान उन्हें गिरफ्तार किया गया था और बाद में इलाज के बहाने वे ब्रिटेन चले गए थे। उन पर भ्रष्टाचार, हिंसा और सत्ता के दुरुपयोग जैसे कई आरोप लगे, जिन्हें वे और उनकी पार्टी राजनीतिक साजिश बताते रहे हैं। कुछ मामलों में सजा भी हुई थी, लेकिन 2024 में सत्ता परिवर्तन के बाद कई मामलों पर रोक लगा दी गई।

अपने संबोधन में तारिक रहमान ने कहा कि जैसे 1971 में देश को आजादी मिली थी, वैसे ही 2024 में जनता ने फिर से लोकतंत्र की रक्षा की है। उन्होंने कहा कि वे एक सुरक्षित, समावेशी और न्यायपूर्ण बांग्लादेश बनाना चाहते हैं, जहां हर नागरिक बिना डर के जी सके।

कुल मिलाकर, उनकी वापसी ने बांग्लादेश की राजनीति में नई ऊर्जा और नई बहस को जन्म दिया है, और आने वाले चुनावों से पहले देश की दिशा तय करने में यह एक अहम मोड़ माना जा रहा है।

भारत का 1 ट्रिलियन डॉलर निर्यात लक्ष्य मुश्किल, वैश्विक मंदी बनी बड़ी चुनौती

(एजेन्सी)।

भारत सरकार लंबे समय से 1 ट्रिलियन डॉलर के निर्यात लक्ष्य की ओर बढ़ने की बात कर रही है, लेकिन मौजूदा वैश्विक हालात इस राह को कठिन बनाते दिख रहे हैं। ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव की ताजा रिपोर्ट के अनुसार, वित्त वर्ष 2026 के अंत तक यह लक्ष्य हासिल होना मुश्किल नजर आ रहा है। बता दें कि थिंक टैंक के मुताबिक, चालू वित्त वर्ष में भारत का कुल निर्यात लगभग स्थिर रह सकता है और इसके 850 अरब डॉलर के आसपास सिमटने की संभावना है, जो तय लक्ष्य से करीब 150 अरब डॉलर कम है। रिपोर्ट में कहा गया है कि वैश्विक मांग की सुस्ती और बढ़ती संरक्षणवादी नीतियां भारतीय निर्यात पर दबाव बना रही हैं।

GTRI के संस्थापक अजय श्रीवास्तव ने कहा कि इस समय निर्यात में असली सहारा सेवाओं के क्षेत्र से मिल रहा है। उनका मानना है कि सेवाओं का निर्यात 400 अरब डॉलर के आंकड़े को पार कर सकता है, जबकि वस्तु निर्यात में लगभग कोई बढ़ोतरी नहीं दिख रही है। मौजूद जानकारी के अनुसार, अगर भारत अमेरिका और यूरोपीय संघ के साथ बड़े व्यापार समझौते सफलतापूर्वक कर पाता है, तो स्थिति बदल सकती है। हालांकि, श्रीवास्तव का कहना है कि ऐसे समझौते अगले साल से पहले संभव नहीं लगते हैं। गौरतलब है कि अमेरिका और यूरोपीय संघ के साथ भारत के व्यापार में हाल के महीनों में गिरावट दर्ज की गई है। मई से नवंबर के बीच अमेरिका को होने वाला निर्यात करीब 20 प्रतिशत घटा है, जिसका बड़ा कारण वहां लगाए गए अतिरिक्त शुल्क बताए जा रहे हैं। वहीं यूरोपीय संघ में भी कार्बन बॉर्डर एडजस्टमेंट मैकेनिज्म जैसी नीतियों के चलते भारतीय निर्यात पर दबाव बढ़ा है।

हालांकि, रिपोर्ट यह भी बताती है कि भारत ने अन्य बाजारों की ओर रुख करना शुरू कर दिया है। अमेरिका और यूरोप के बाहर के देशों में निर्यात लगभग 5.5 प्रतिशत बढ़ा है, जो संकेत देता है कि भौगोलिक विविधता धीरे-धीरे बन रही है। विशेषज्ञों के अनुसार, अब भारत को केवल नए व्यापार समझौते करने के बजाय अपने निर्यात ढांचे को मजबूत करने पर ध्यान देना होगा। इलेक्ट्रॉनिक्स, इंजीनियरिंग और टेक्सटाइल जैसे क्षेत्रों में अधिक मूल्यवर्धन और प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता बढ़ाने की जरूरत है।

वैभव सूर्यवंशी ने 36 गेंदों में बनाई 100 रन की पारी

(एजेन्सी)। बुधवार को विजय हजारे ट्रॉफी के प्लेट लीग मुकाबले में बिहार की ओर से खेलते हुए 14 साल के वैभव ने अरुणाचल प्रदेश के खिलाफ महज 36 गेंदों में शतक जड़ दिया। यह भारतीय लिस्ट-ए क्रिकेट में दूसरा सबसे तेज शतक है। उनसे तेज शतक सिर्फ अनमोलप्रीत सिंह ने लगाया था, जिन्होंने पिछले सीजन 35 गेंदों में यह कारनामा किया था। मौजूद जानकारी के अनुसार, वैभव यहीं नहीं रुके और उन्होंने 54 गेंदों में 150 रन पूरे किए। अंततः वह 84 गेंदों पर 190 रन बनाकर आउट हुए। उनकी इस विस्फोटक पारी की बदौलत बिहार ने 50 ओवरों में 6 विकेट पर 574 रन बनाए और जवाब में अरुणाचल प्रदेश की पूरी टीम 177 रन पर सिमट गई। इस तरह मुकाबला 397 रन के बड़े अंतर से समाप्त हुआ। गौरतलब है कि इस ऐतिहासिक पारी के बाद कांग्रेस सांसद और पूर्व केंद्रीय मंत्री शशि थरूर ने भी सोशल मीडिया पर प्रतिक्रिया दी। उन्होंने लिखा कि आखिरी बार 14 साल की उम्र में ऐसा अद्भुत टैलेंट सचिन तेंदुलकर में देखा गया था और अब वैभव सूर्यवंशी उसी राह पर नजर आ रहे हैं। यह पहली बार नहीं है जब वैभव ने सुर्खियां बटोरी हों। इससे पहले उन्होंने सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में महाराष्ट्र के खिलाफ 61 गेंदों पर नाबाद 108 रन बनाए थे और टूर्नामेंट के इतिहास में सबसे कम उम्र में शतक लगाने वाले बल्लेबाज बने थे। इतना ही नहीं, अंडर-19 एशिया कप में उन्होंने यूएई के खिलाफ 95 गेंदों में 171 रन की पारी खेली थी, जो भारतीय खिलाड़ी द्वारा टूर्नामेंट में सर्वोच्च व्यक्तिगत स्कोर है। वहीं, राइजिंग स्टार्स एशिया कप में उन्होंने भारत ए के लिए 42 गेंदों में 144 रन ठोककर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया था।

पूर्वी जोन दिव्यांग क्रिकेट प्रतियोगिता में बिहार की धमाकेदार जीत

संजना भारती संवाददाता

कोलकाता। खेले गए पूर्वी जोन दिव्यांग क्रिकेट प्रतियोगिता के दूसरे लीग मैच में बिहार ने मजबूत उड़ीसा टीम को 6 विकेट से हराया। टॉस उड़ीसा ने जीता और पहले बल्लेबाजी करने का निर्णय लिया। निर्धारित 12 ओवर में उड़ीसा ने 5 विकेट पर 105 रन बनाये।

उड़ीसा के ओर से सर्वाधिक रन जगजीत मोहनती ने 19 बॉल पे 28 रन, राजेश प्रधान 7 बॉल 20 रन और भरत पंडा ने 20 रन बनाये। बिहार की ओर से शुवलेश ने घातक गेन्दबाजी करते हुए 3 ओवर में 20 रन देते हुए 3 विकेट लिये संजीव और इमरान ने 1-1 विकेट लिया। 106 रन का पीछा करने उतरी बिहार टीम के सालामी बल्लेबाजों कप्तान आसीत सिंह और पंकज कुमार ने धमाकेदार शुरूआत की दोनों ने 4 ओवर 4 बॉल में ही 55 रन कूट दिये, कप्तान आसीत सिंह और पंकज ने मैदान के चारो तरफ चौको छक्कों की बौछार लगा दी, बिहार का पहला विकेट पंकज के रूप में गिरने के बाद भी अगले बल्लेबाज कप्तान आसीत शुवलेश और वकार ने आतिशबाजी जारी रखी और मात्र 9 ओवर 4 गेंद में ही 105 रन को चेस कर लिया।

बिहार की ओर से कप्तान आसीत कुमार सिंह 27 रन 14 बॉल 2 चौका 2 छक्का, पंकज ने 33 रन (16) बॉल 1 चौका 4 छक्का, शुवलेश 18 रन(10बॉल)1 चौका 2 छक्का और वकार यूनिस ने त ाबरतोड़ नाबाद 17 रन (4) बॉल 1 चौका 2 छक्का लगाते हुए 10 वे ओवर में ही 6 विकेट से मजबूत उड़ीसा को हराकर धमाकेदार जीत दर्ज की। शुवलेश कुमार के आलराउंड खेल 3 विकेट और 20 रन बनाने के लिये मैच का सर्वश्रेष्ठ खिलाडी घोषित किया गया।

लीग का उद्घाटन मैच झारखण्ड और बंगाल के बिच खेला गया था जिसे बंगाल ने 7 विकेट से जीता ।कल का मैच बिहार और झारखण्ड तथा बंगाल और उड़ीसा के बिच खेला जायेगा। फाइनल मैच भी कल ही खेला जायेगा।

अक्षय कुमार की 'वेलकम टू द जंगल' का ग्रैंड टीजर जारी

(एजेन्सी)।

क्रिसमस डे के खास मौके पर अक्षय कुमार ने अपने चाहने वालों को एक बिग सरप्राइज दिया है। उन्होंने कई विवादों से घिरने वाली उनकी अपकमिंग मल्टीस्टारर फिल्म 'वेलकम टू द जंगल' का टीजर फैंस के लिए रिलीज किया है। इतना ही नहीं, अक्षय ने अपने फैंस को यह भी बताया कि उनकी अपकमिंग फिल्म कब थिएटर्स में रिलीज होगी। कैसा है वेलकम टू द जंगल का टीजर। हाल ही में अक्षय कुमार ने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम अकाउंट पर कॉमेडी फ्रेंचाइजी 'वेलकम टू द जंगल' का टीजर शेयर किया है। इस वीडियो में रवीना टंडन, सुनील शेट्टी, अरशद वारसी, तुषार कपूर, जॉनी लीवर, दिशा पटानी, जैकलीन फर्नांडीज, आफताब शिवदसानी और राजपाल यादव सहित कई सितारे नजर आ रहे हैं। टीजर में देखें सकते हैं कि सभी के हाथों में बंदूकें हैं और उन्होंने सुरक्षात्मक गियर पहन रखे हैं। इस फिल्म अक्षय कुमार ने डबल रोल में नजर आ रहे हैं, जिनमें से एक बूढ़ा है और एक जवान।

कियारा आडवाणी ने टॉक्सिक में अपनी भूमिका के बारे में किया खुलासा

बॉलीवुड एक्ट्रेस कियारा आडवाणी ने हाल ही में अपनी आने वाली फिल्म टॉक्सिक- ए फेयरी टेल फॉर ग्रोन-अप्स के लिए एक पोस्ट शेयर किया। इसमें उन्होंने अपनी भूमिका को बहुत खास बताया।

टॉक्सिक में रोल को लेकर कियारा का खुलासा

फिल्म टॉक्सिक में नादिया का रोल निभा रही कियारा आडवाणी ने एक्स पर एक नोट लिखा, यह रोल मुझसे शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से बहुत कुछ मांगता था। मेरे लिए यह पूरी तरह बदलाव लाने वाला अनुभव रहा। अब तक का मेरा सबसे मुश्किल रोल। महीनों की मेहनत। एक निडर छलांग। इस फर्स्ट लुक को इतना प्यार मिलना मेरे लिए सबकुछ है। मैं शब्दों से ज्यादा आभारी हूं।

फिल्म निर्माताओं का पोस्ट

हाल ही में फिल्म के निर्माताओं ने कियारा का फर्स्ट लुक जारी किया था। इसमें कियारा को स्टाइलिश गाउन में दिखाया गया, जो फर्श तक लंबी और ऊंची स्लिट वाली है। वह चमकदार स्टेज पर आत्मविश्वास से खड़ी नजर आईं। बैकग्राउंड में सर्कस जैसा माहौल दिखा। उनके चेहरे पर ग्लैमर के साथ दुख और उदासी के भाव नजर आए।

फिल्म टॉक्सिक के बारे में

यश की मुख्य भूमिका वाली यह फिल्म 19 मार्च 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। इसे गीतु मोहनदास ने निर्देशित किया है। प्रोडक्शन वीएन प्रोडक्शंस और मॉन्स्टर माइंड क्रिएशन्स ने किया है। यह कन्नड़ और अंग्रेजी भाषाओं में रिलीज होगी। बाद में इसे हिंदी, तमिल, तेलुगु और मलयालम में डब किया जाएगा। यह कन्नड़ सुपरस्टार यश की सुपरहिट फिल्म केजीएफ चैप्टर 2 (2022) के बाद पहली फिल्म है। कियारा को हाल ही में वॉर 2 में देखा गया था, जिसमें ऋतिक रोशन और जूनियर एनटीआर मुख्य भूमिका में थे।

राशा थडानी से अहान पांडे तक इस साल इन स्टार किड्स ने किया डेब्यू

इस साल कई नए सितारों ने सिनेमा की दुनिया में कदम रखे। चर्चित सितारों के बच्चों के डेब्यू ने भी दर्शकों का ध्यान खींचा। जनवरी में फिल्म आजाद की रिलीज के साथ ही यह सिलसिला शुरू हो गया था और सालभर चला। मगर, बॉक्स ऑफिस पर कौन अपना दम दिखा पाया?

राशा थडानी

इस साल जनवरी में रिलीज हुई फिल्म आजाद के जरिए रवीना टंडन की बेटी राशा थडानी ने इंडस्ट्री में कदम रखे। सिर्फ उन्होंने ही नहीं, बल्कि उनके साथ अजय देवगन के भांजे अमन देवगन ने भी डेब्यू किया। मगर, यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर खास नहीं रही। हालांकि, राशा ने अपने आइटम नंबर ऊई अम्मा से जरूर सुर्खियां बटोरीं।

इब्राहिम अली खान

सैफ अली खान और अमृता सिंह की बेटी सारा अली खान जहां बॉलीवुड में स्थापित हो चुकी हैं, वहीं इस साल उनके बेटे इब्राहिम अली खान ने फिल्म नादानियां से डेब्यू किया था। हालांकि, इब्राहिम का यह ओटीटी डेब्यू था। मगर फिल्म को काफी नेगेटिव रिव्यू मिले।

खुशी कपूर और जुनैद खान

फिल्म लवयापा के जरिए आमिर खान के बेटे जुनैद खान और श्रीदेवी की छोटी बेटी खुशी कपूर ने बड़े पर्दे पर डेब्यू किया। इससे पहले जुनैद ओटीटी पर फिल्म महाराज में नजर आए थे और उनके अभिनय की खूब तारीफ हुई थी। वहीं, खुशी कपूर ओटीटी पर आई फिल्म द आर्चीज में नजर आ चुकी थीं। बड़े पर्दे पर रिलीज हुई दोनों सितारों की पहली फिल्म लवयापा फ्लॉप रही।

आर्यन खान

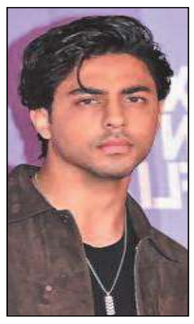

बॉलीवुड के किंग शाहरुख खान के बेटे आर्यन खान ने भी इस साल डेब्यू किया। हालांकि, उन्होंने प्लेटफॉर्म ओटीटी चुना। उन्होंने सीरीज द बैडस ऑफ बॉलीवुड के जरिए बतौर निर्देशक डेब्यू किया। उन्हें काफी अच्छी प्रतिक्रिया मिली। आर्यन दर्शकों का दिल जीतने में कामयाब रहे।

अहान पांडे

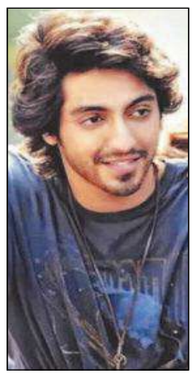

इस साल का सबसे धमाकेदार डेब्यू अहान पांडे ने किया। एक्टर चंकी पांडे के भतीजे ने फिल्म सैयारा के जरिए धूम मचा दी। बता दें कि फिल्म की लीड एक्ट्रेस अनीत पड्डा की भी बतौर मुख्य कलाकार यह पहली फिल्म थी। बॉक्स ऑफिस पर सैयारा छा गई और 300 करोड़ी क्लब में एंट्री ली।

शनाया कपूर

एक्टर संजय कपूर की बिटिया शनाया कपूर ने भी इसी साल अभिनय की दुनिया में बोहनी की। उन्होंने फिल्म आंखों की गुस्ताखियां से डेब्यू किया। इसमें वे विक्रांत मैसी के अपोजिट नजर आईं। मगर, कमाई के मामले में फिल्म फुस्स साबित रही।

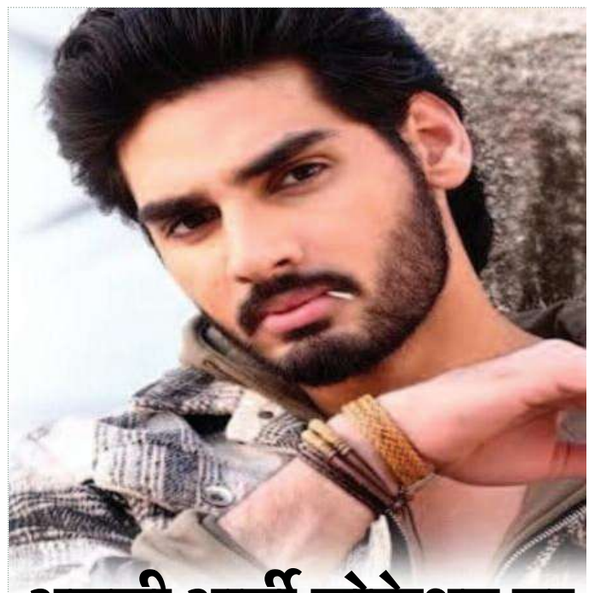

असली आर्मी लोकेशन पर शूटिंग करना नहीं था आसान

हिंदी सिनेमा के लिए फैंस के लिए नए साल की शुरुआत देशभक्ति से भरी फिल्म बॉर्डर 2 से होने वाली है, जिसमें सनी देओल, दिलजीत सिंह दोसांझ, वरुण धवन और अहान शेट्टी सैनिक के किरदार में दिखने वाले हैं। ये फिल्म अहान शेट्टी के लिए बेहद खास है क्योंकि पहली फिल्म तड़प के सुपरफ्लॉप होने के बाद अब बॉर्डर 2 उनके करियर के लिए अहम है। फिल्म में अभिनेता ने नेवी अफसर का रोल प्ले किया है और अब उन्होंने आईएएनएस से खास बातचीत में अपने किरदार और फिल्म की शूटिंग के किस्सों को शेयर किया है। कड़ी मिलिट्री ट्रेनिंग और मुश्किल एक्शन सीक्वेंस के लिए अहान ने बहुत मेहनत की। उन्होंने बताया कि ट्रेनिंग वहां हुई, जहां असली सैनिक ट्रेनिंग लेते हैं। अहान ने कहा कि फिल्म की शूटिंग एनडीए खड़कवासला में हुई और इसका मकसद सिर्फ असली विजुअल्स कैप्चर करना नहीं था बल्कि उस माहौल को सीखना था, जिसने मेरे किरदार को पूरी तरह बदल दिया। आप वहां ट्रेनिंग ले रहे होते हैं जहां असली ऑफिसर ट्रेनिंग लेते हैं। वह माहौल आपको कुछ भी गलत करने नहीं देता, बल्कि आपकी बॉडी, आपका पोस्चर और बात करने का तरीका वहां के हिसाब से ढल जाता है। शूटिंग का अनुभव शेयर करते हुए उन्होंने कहा कि शूटिंग की लोकेशन बदलने लगी लेकिन मेरा रूटीन पहले जैसा रहा। वहीं स्ट्रेंथ ट्रेनिंग सेशन, एजिलिटी, कार्डियो, आइस बाथ, स्टीम, सौना और रेड लाइट थेरेपी रोजाना का रूटीन बन गया। आराम के लिए समय नहीं था क्योंकि ट्रेनिंग नहीं छोड़ सकते थे और रोजाना युद्ध वाले सीन शूट करने होते थे, तो आराम का समय नहीं होता है। लगता था कि अब बस अच्छा परफॉर्म करना है। असली मिलिट्री जगहों पर शूटिंग करने में अहान को काफी चुनौतियों का सामना करना पड़ा था। उन्होंने बताया कि 40 डिग्री के तापमान में युद्ध के सीन को शूट किया और 12 घंटों की शूटिंग के दौरान टेक्निकल गियर पहनकर काम करना होता था। बता दें कि बॉर्डर 2 में अहान शेट्टी एक नेवी ऑफिसर का रोल प्ले करने वाले हैं। ये फिल्म और किरदार दोनों ही उनके लिए खास हैं क्योंकि उनके पिता सुनील शेट्टी ने भी फिल्म बॉर्डर में सीमा पर तैनात सैनिक भैरव सिंह का रोल प्ले किया था। फिल्म में उनके जोश और किरदार को खूब पसंद किया गया था, लेकिन अब देखना होगा कि दर्शक उनके बेटे अहान को कितना प्यार देते हैं।

इक्कीस ने मुझे बदल दिया

अगस्त्य नंदा ने सुनाए शूटिंग के किस्से

फिल्म ' इक्कीस' की रिलीज से फिल्म के मुख्य अभिनेता अगस्त्य नंदा ने फिल्म को लेकर बात की। मीडिया से बातचीत में अगस्त्य ने फिल्म से जुड़े अपने अनुभव, डर, सीख और निजी यादों को खुलकर साझा किया। इस दौरान एक्टर ने धर्मेंद्र के साथ पहली मुलाकात से लेकर शूटिंग के दौरान उठाए गए जोखिम, अपने चार साल के सफर और परिवार से मिली सीख तक के बारे में बताया। अभिनेता ने कहा कि यह फिल्म उनके लिए सिर्फ एक प्रोजेक्ट नहीं बल्कि एक गहरा और निजी अनुभव रही है।

ऐसे हुई धर्मेंद्र के साथ पहली मुलाकात

दिवंगत अभिनेता धर्मेंद्र से अपनी पहली मुलाकात को याद करते हुए अगस्त्य ने बताया कि जब मैंने यह फिल्म साइन की थी, उसी दिन धर्मेंद्र जी का जन्मदिन था। मुझे लगा कि खुद को उनसे मिलवाने का सबसे सही तरीका यही होगा कि जाकर उनका आशीर्वाद लिया जाए। उस दिन श्रीराम सर, दिनेश सर, बिनी और मैं उनसे मिलने गए थे। सच कहूं तो मैं बहुत नर्वस था, क्योंकि मुझे समझ नहीं आ रहा था कि उनसे क्या कहूं और कैसे बात करूं। लेकिन वह बेहद गर्मजोशी से मिले। उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया और वह पल मेरे साथ हमेशा के लिए जुड़ गया।

फिल्म के दौरान काफी कुछ सीखने को मिला

फिल्म 'इक्कीस' के सफर के बारे में अगस्त्य ने कहा कि सच कहूं तो इस फिल्म की शुरुआत करने को लेकर आज जब पीछे मुड़कर देखता हूं, तो मैं खुद को एक बिल्कुल अलग इंसान महसूस करता हूं। जब मैंने यह फिल्म शुरू की थी, तब मैं सिर्फ 21 साल का था और आज मैं 25 का हूं। उस वक्त मुझे बिल्कुल अंदाजा नहीं था कि मैं इतना कुछ सीखूंगा या इतने शानदार लोगों के साथ काम करने का मौका मिलेगा। यह फिल्म मेरे लिए सच में एक मजबूत नींव बन गई है। ऐसी नींव, जिसे मैं आगे हर फिल्म में अपने साथ लेकर जाऊंगा। चाहे वह अभिनय से जुड़ा हो या फिर सेट पर रहने के नजरिए से। दिनेश सर से जो मार्गदर्शन मुझे मिला, वह मेरे लिए बहुत मायने रखता है।

जोखिम भरी रही फिल्म की शूटिंग

फिल्म की शूटिंग से जुड़े अनुभवों को साझा करते हुए नवोदित कलाकार ने कहा कि शूटिंग के दौरान कई ऐसे पल आए जब सच में लगता था कि कुछ भी हो सकता है। हमने ये टैंक खुद बनाए थे, इसलिए वे काम करने के लिहाज से पूरी तरह सुरक्षित नहीं थे। फिल्म के दूसरे हिस्से में कुछ एक्शन सीन बहुत जोखिम भरे हैं। हमने ऐसे मूवमेंट किए जो असली टैंक करते हैं। हमने काफी रिहर्सल की थी, लेकिन फिर भी डर बना रहता था। खासकर तब, जब टैंक 20 या 30 फीट की ऊंचाई पर मुड़ता था। उस वक्त सच में डर लगता था कि कहीं वह पलट न जाए। इसके अलावा धमाके हो रहे थे। हर चीज की टाइमिंग बिल्कुल सही होनी थी और टैंक को ठीक उसी पल रुकना था। यह सब आसान नहीं था। शुक्र है कि कुछ गलत नहीं हुआ।

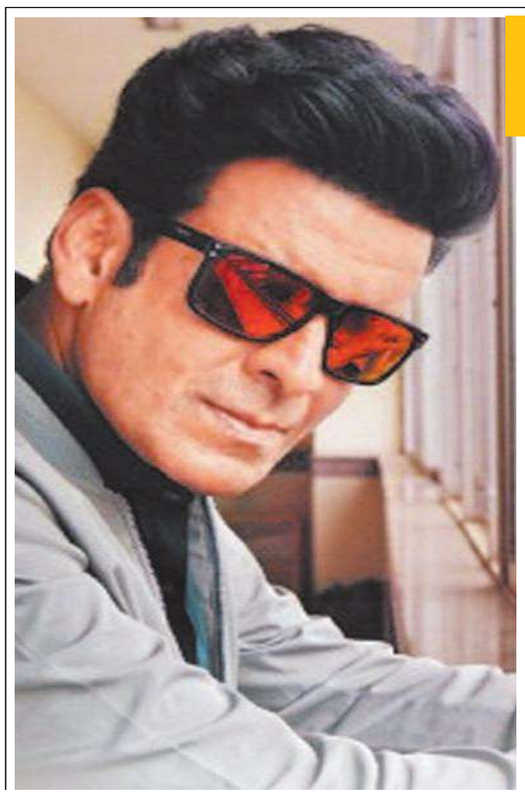

बच्चों से कुछ न छुपाएं, वे हर चीज खुलकर देख-पढ़ रहे हैं

मुंबई का किंग कौन यह डायलॉग बोलने वाले एक्टर मनोज बाजपेयी अनेक बार साबित कर चुके हैं कि वह अभिनय के मामले में किंग हैं। उन्हें 4 बार राष्ट्रीय पुरस्कारों से नवाज़ा जा चुका है। अब यह कद्दावर अभिनेता अपने 30 साल के सफर में फिल्मों की सेंचुरी लगा चुका है। इस मुलाकात में वह अपने करियर, पैरंटिंग और जिंदगी के सबक की गिरहें खोलने में जरा भी नहीं हिचकिचाते।

सोशल मीडिया से आजकल हर माता-पिता झपरेशान हैं। पैरंटिंग पर आपकी राय क्या है?

आप जहां भी जाएंगे, सोशल मीडिया आपके पीछे-पीछे आएगा। यह आपको नहीं छोड़ने वाला तो इसे हैंडल करना होगा। जैसे मेरी बेटी आवा हॉस्टल में रहती है। वहां वह मॉनिटरिंग में रहती है, लेकिन जब वह घर आती है तो उसकी मां उसे फोन दे देती है। मैं यही कहूंगा कि बैन मत करिए, नजर रखिए। जितना आप उन पर रोक-टोक लगाएंगे, उतना वे आपसे छुपाते जाएंगे। पैरंटिंग का जो सिद्धांत है, वह शबाना (पत्नी) बहुत अच्छे-से जानती हैं और समझती हैं। आवा अपनी मां से कोई बात छुपाती नहीं। आवा कोई बात बाहर किसी दूसरे से सुने और असमंजस में पड़े, इससे पहले ही उसकी मां वे तमाम बातें उसे बता चुकी होती है। बच्चों के साथ आपको खुलकर बात करनी पड़ेगी। इस समझदारी के साथ पैरंटिंग के अलावा लगातार मॉनिटरिंग की भी जरूरत होती है। बच्चे का दिमाग जब तक विकसित नहीं होता, तब तक उसे संभाल कर रखना माता-पिता की जिम्मेदारी है। मगर बच्चे से चीजें छुपाए नहीं। उसे हर चीज के बारे में बताएं क्योंकि वे हर चीज देख-सुन और पढ़ रहे हैं। आवा किसी से कुछ भी छुपा ले, मगर मां से कुछ नहीं छुपाती।

क्या आप अपनी वेब सीरीज के टाइटल की तरह असल जिंदगी में भी फैमिली मैन हैं?

यह जोर से मत कहिए! मेरी पत्नी ने सुन लिया तो आपको तुरंत बता देंगी कि यह बिलकुल गलत बात है। मैं शूटिंग पर रहता हूं तो मुझसे शिकायतों का सिलसिला चलता रहता है। पर हां, जब काम नहीं कर रहा होता तो पूरा समय घर पर बिताता हूं। तब 10-15 दिन बाद ही मेरी पत्नी और बेटी कहने लगती हैं कि अब आप शूटिंग पर कब जाओगे? घर पर रहकर बहुत तंग करते हैं। मुझे परिवार के साथ रहना बहुत अच्छा लगता है। परिवार जानता है कि मुझे काम से कितना प्रेम है। उम्र के साथ शरीर थोड़ा साथ नहीं देता, मगर शूटिंग करने में अब भी उतनी ही खुशी मिलती है। हां, शूटिंग के बाद परिवार संग रहना जरूरी है। मैं कहीं विदेश में शूटिंग करूं और परिवार साथ न हो तो मुझे यही बुरा लगता है कि वे इस नए देश को मेरे साथ अनुभव नहीं कर पा रहे। मैं ऐसा ही इंसान हूं, मगर कमियां बहुत हैं, जो मेरी पत्नी बेहतर बताएंगी।

30 साल के सफर को पलट कर देखते हैं तो कैसा लगता है?

मैं पीछे मुड़कर देखता ही नहीं। यह मेरे लिए हमेशा मुश्किल रहा है। मेरा स्वभाव ही ऐसा है कि बीती बातों में नहीं उलझता क्योंकि वहां अब कुछ नया मिलने वाला नहीं होता। समय बदला, चीजें बदलीं, समाज बदला और इंडस्ट्री भी लगातार बदलती गई। अब जिस रफ़्तार से आ रहा है, वह बहुत कुछ बदल रहा है और बदलेगा भी। मेरी एक आदत रही है, बदलते वक्त के साथ खुद को बदलना। बदलाव के साथ तालमेल बैठाकर आगे बढ़ना और अच्छा काम करना- यही मुझे आता है और यही मैं करता आया हूं। उसी में बेहतर करने की कोशिश करता हूं ताकि नई पीढ़ी के साथ कदमताल बनी रहे। अगर किसी चीज में मैं बुरा हूं और मुझे कोई चीज नहीं आती तो मैं उसके लिए किसी को हायर कर लेता हूं। इसके पीछे मेरी सोच यही होती है कि मेरा काम होता रहे और मैं अभिनय करता रहूं।

किस चीज को खोने का दुख सताता है?

अगर इमोशनल तौर पर सोचूं तो मैंने क्या खोया? मैंने खोया है, माता-पिता का साथ। मैं 9 साल की उम्र में हॉस्टल चला गया था और तब से उनके साथ रह ही नहीं पाया। फिर दिल्ली चला गया जबकि वे गांव में थे। जब वे दिल्ली आए, तब तक मैं मुंबई आ चुका था। उनके अंतिम दिनों में जो साथ और जिम्मेदारी मेरे भाई-बहनों ने निभाई, वह मेरा हिस्सा ही नहीं बन सका। मैं उनसे दूर था। आप ऐसी यात्रा पर निकलते हैं तो इस तरह के त्याग के लिए तैयार रहना पड़ेगा। आपको बहुत कुछ खोना पड़ेगा।

आपके जिंदगी के सबक क्या हैं?

मुझे लगता है कि किसी दूसरे को अपनी जिंदगी का निर्धारण न करने दें और न ही उससे प्रभावित होइए क्योंकि आपको लेकर उनकी राय लगातार बदलती रहती है। आपको खुद के और आपके आसपास के लोगों के अलावा कोई नहीं जानता। यही वजह है कि मैं हर अभिनेता से यह कहता हूं कि शुक्रवार से डरो मत। अगर यह शुक्रवार बुरा गया है तो अगला अच्छा जाएगा और फिर आपके बारे में उनकी राय बदल जाएगी। लोगों की राय कभी भी एक जैसी नहीं रहती। इसलिए लोगों की राय पर अपना जीवन न चलाएं। जो मन में हो वही करें, पर यह जरूर देखें कि उससे किसी दूसरे को तकलीफ़ न हो ।

सुशासन दिवस पर करनाल में भव्य कार्यक्रम, अटल जी के विजन को किया गया नमन

अटल बिहारी वाजपेयी ने शासन को सुशासन में बदला: मनोहर लाल

एसबी विशेष संवाददाता/मदन पुरी

करनाल। पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी की 101वीं जयंती के अवसर पर वीरवार को करनाल के सेक्टर-9 स्थित अटल पार्क में सुशासन दिवस के उपलक्ष्य में भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में केंद्रीय ऊर्जा, आवासन एवं शहरी कार्य मंत्री मनोहर लाल ने कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी ने देश को ऐसा विजन दिया, जिसने शासन को सुशासन की दिशा में मोड़ा। उनके इसी विचार को आगे बढ़ाते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वर्ष 2014 में 25 दिसंबर को सुशासन दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की।

कार्यक्रम से पहले केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल ने अटल बिहारी वाजपेयी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें नमन किया। उन्होंने कहा कि भारत ने लगभग 500 वर्षों तक गुलामी का कठिन दौर देखा, लेकिन संत-महापुरुषों और स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदानों से राष्ट्र भावना कभी कमजोर नहीं पड़ी। आज हम जिस आजादी और लोकतंत्र में सांस ले रहे हैं, वह सस्ती नहीं, बल्कि अनगिनत बलिदानों का परिणाम है। सरकार का संकल्प देश के 5000 वर्ष पुराने गौरवशाली इतिहास और सांस्कृतिक विरासत को संजोकर आगे बढ़ाने का है, जिसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी निरंतर सकारात्मक प्रयास कर रहे हैं।

मनोहर लाल ने कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने शासनकाल में कर्तव्य, सेवा और सुशासन को प्राथमिकता दी। स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना के माध्यम से उन्होंने देश को सड़कों से जोड़कर उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम को एकता के सूत्र में पिरोया। हरियाणा में वर्ष 2014 में भाजपा सरकार बनने के बाद सुशासन को धरातल पर उतारने के लिए अनेक योजनाएं लागू की गईं। सीएम विंडो के माध्यम से आमजन की शिकायतों का घर बैठे समाधान किया जा रहा है और पिछले 10 वर्षों में 11 लाख से अधिक शिकायतों का निवारण हो चुका है। परिवार पहचान पत्र और ऑनलाइन राशन कार्ड जैसी व्यवस्थाओं से पात्र लोगों को सीधे लाभ मिला और भ्रष्टाचार पर प्रभावी नियंत्रण हुआ।

हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष हरविंद्र कल्याण ने कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी ने उस दौर में देश को सुशासन की राह दिखाई, जब राष्ट्र अनेक चुनौतियों से जूझ रहा था। उन्होंने मनोहर लाल के मुख्यमंत्री कार्यकाल की सराहना करते हुए कहा कि हरियाणा में अहंकार की राजनीति समाप्त कर सेवा भाव की संस्कृति विकसित हुई और युवाओं को बिना खर्ची-पर्ची केवल योग्यता के आधार पर नौकरियां मिलीं।

करनाल की मेयर रेनू बाला गुप्ता ने कहा कि अटल जी के दिखाए मार्ग पर चलते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश को विकास की नई गति मिली है। भाजपा जिला अध्यक्ष प्रवीण लाठर ने कहा कि अटल जी द्वारा रखी गई विकास की नींव को आज मजबूती मिल रही है और अंत्योदय के लक्ष्य की ओर देश तेजी से अग्रसर है। कार्यक्रम में इंद्री विधायक एवं गवर्नमेंट चीफ व्हिप रामकुमार कश्यप, नीलोखेड़ी विधायक भगवानदास कबीरपंथी सहित बड़ी संख्या में भाजपा पदाधिकारी और गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

जेडी इंटरनेशनल स्कूल में चार साहिबजादों के शहीदी दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित

संजना भारती संवाददाता

असन्ध। जेडी इंटरनेशनल स्कूल में चार साहिबजादों के शहीदी दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों व शिक्षकों द्वारा लंगर का आयोजन किया गया। जिसमें चाय, पकौड़े और बिस्किट वितरित किए गए। लंगर के माध्यम से समानता, भाईचारे और सेवा भावना का संदेश दिया गया। विद्यालय के चेयरमैन एस.के. भारद्वाज ने कहा कि चार साहिबजादों का बलिदान मानव इतिहास में अद्वितीय है। जिसने सत्य, धर्म और न्याय के मार्ग पर अडिग रहने की प्रेरणा दी। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे इन महान शहीदों को अपने जीवन में आत्मसात करे और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझें। उन्होंने कहा कि युवा पीढ़ी को चार साहिबजादों के बलिदान को याद रखना चाहिए। इस अवसर पर चार साहिबजादों के जीवन, संघर्ष और शहादत पर प्रकाश डाला गया।

इस अवसर पर शिक्षकों ने विद्यार्थियों को सेवा, करुणा और सामाजिक संवेदनशीलता के महत्व से अवगत कराया।

जनता के प्रति संवेदनशीलता सुशासन का सबसे बड़ा आधार: राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा

सुशासन दिवस के रूप में मनाया गया पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म दिवस

एसबी ब्यूरो प्रमुख/निर्मल कुमार

कैथल। भारत रत्न एवं पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती के अवसर पर वीरवार को जिला स्तरीय सुशासन दिवस समारोह का भव्य आयोजन लघु सचिवालय के सभागार में किया गया। इस कार्यक्रम में राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। उनके साथ विधायक सतपाल जांबा, पूर्व विधायक लीला राम और कुलवंत बाजीगर भी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम में पंचकूला में आयोजित राज्यस्तरीय समारोह के माध्यम से सभी ने मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी का उद्बोधन भी सुना।

राज्य सभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा ने अटल बिहारी जी की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया और उन्हें नमन किया। उन्होंने कहा कि अटल जी का संपूर्ण जीवन लोकतांत्रिक मूल्यों, सुशासन और राष्ट्र सेवा को समर्पित रहा। उनके लिए शासन केवल सत्ता का माध्यम नहीं, बल्कि सेवा का एक पवित्र मार्ग था। उनका मानना था कि हम प्रशासक नहीं बल्कि जनता के सेवक हैं। सुशासन का सबसे बड़ा आधार संवेदनशीलता है। सुशासन का अर्थ यह है कि प्रशासन जनता के प्रति संवेदनशील बने और आमजन तक बिना परेशानी के सरकारी सेवाओं का लाभ मिले। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी जनता के प्रति अत्यंत संवेदनशील है, क्योंकि वे दिन रात आमजन की समस्याएं सुनकर उनका समाधान करवाते हैं।

राज्य सभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा ने पूर्व मुख्यमंत्री एवं वर्तमान केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल का जिक्र करते हुए कहा कि 2014 में जब उन्होंने हरियाणा की कमान संभाली थी तो तब से ही उन्होंने विभिन्न प्रकार के पोर्टल लांच करके सरकारी सेवाओं को आमजन तक सरल एवं सुगम तरीके से पहुंचाने का काम किया। जिससे पारदर्शिता आई है और बिचौलिया सिस्टम का अंत हुआ। आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक क्लिक से पीएम किसान सम्मान निधि सहित अन्य योजनाओं का लाभ डीबीटी के माध्यम से लाभार्थी के खाते में डालते हैं, वहीं मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में बुढ़ापा पेंशन सहित अन्य योजनाओं का लाभ पात्र व्यक्ति को घर बैठ मिल रहा है।

उन्होंने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की सोच को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी निरंतर आगे बढ़ा रहे हैं। देश व प्रदेश में पंक्ति में खड़े अंतिम व्यक्ति तक सरकार की योजनाओं का लाभ पहुंचाया जा रहा है। उन्होंने अधिकारियों व कर्मचारियों से आह्वान किया कि यदि कोई बुजुर्ग या गरीब व्यक्ति अपनी समस्या लेकर आपके पास आए, तो उसका काम समयबद्ध तरीके से और सम्मान के साथ होना चाहिए। जनता के प्रति अपनी जवाबदेही को पूरी ईमानदारी से निभाएं। यही अटल जी को हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

विधायक सतपाल जांबा ने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को नमन करते हुए कहा कि इस दिवस का मूल उद्देश्य नागरिकों को सुशासन, पारदर्शिता, जवाबदेही और उत्तरदायी प्रशासन के प्रति जागरूक करना है। सुशासन एक ऐसी व्यवस्था है जो देश और समाज को सुचारू, न्यायपूर्ण एवं समृद्ध बनाती है, जहां प्रत्येक नागरिकों के हितों का ध्यान रखा जाता है। सरकार ने विभिन्न प्रकार के पोर्टल लागू किए हैं, जिनके माध्यम से योजनाओं का लाभ दिया जा रहा है। उन्होंने अधिकारियों से आह्वान किया हम जनता के प्रति अपनी जवाबदेही को पूरी ईमानदारी निभाएं।

पूर्व विधायक लीला राम ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में योजनाएं सही मायनों में जमीन तक पहुंच रही हैं। सुशासन विकास को आगे बढ़ाता है, न्याय देता है और व्यवस्था को साफ-सुथरा बनाता है। अटल जी के विजन को सम्मान देते हुए हमारी सरकार आज के दिन को सुशासन दिवस के रूप में मनाती है।

डीसी अपराजिता ने कहा कि सुशासन दिवस केवल एक औपचारिकता नहीं है। केवल 25 दिसंबर ही सुशासन दिवस नहीं माने, बल्कि हर दिन को सुशासन दिवस के रूप में मनाना है। जिला प्रशासन के अधिकारियों व कर्मचारियों की कड़ी मेहनत और सेवा भाव से सीएम विंडो एवं समाधान शिविर के माध्यम से आमजन की समस्याओं का समाधान करने में जिला प्रदेश में अव्वल बना है। सीएम विंडो पर कुल 20162 शिकायत प्राप्त हुई, जिनमें से 19888 शिकायतों का निवारण किया गया। समाधान शिविर में कुल 5326 शिकायतें प्राप्त हुई, जिनमें से 4870 शिकायतों का समाधान किया। डीसी अपराजिता ने अधिकारियों व कर्मचारियों का आह्वान किया कि वे सरकार के आमजन के कल्याण के उद्देश्य के लिए चलाए जा रहे सभी अभियानों व तमाम योजनाओं को क्रियान्वित करवाने में सक्रियता से योगदान दें। ताकि सुशासन दिवस के उद्देश्य को सार्थक बनाया जा सके।

कार्यक्रम में पहुंचने पर डीसी अपराजिता ने मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा का, एडीसी डा. सुशील कुमार ने विधायक सतपाल जांबा का, जिला परिषद सीईओ सुरेश राविश ने पूर्व विधायक लीला राम और सीटीएम गुरविंद्र सिंह ने पूर्व विधायक तेजबीर सिंह, डीएमसी कपिल शर्मा देवेंद्र पांचाल का स्वागत किया। कार्यक्रम के अंत में डीसी अपराजिता ने मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा को शॉल एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। वहीं सीईओ जिला परिषद सुरेश राविश ने विधायक सतपाल जांबा, पूर्व विधायक लीला राम एवं पूर्व विधायक कुलवंत बाजीगर को सम्मानित किया। राष्ट्रगान के बाद एडीसी डा. सुशील कुमार ने सभी अतिथिगणों का धन्यवाद किया।

इस मौके पर पूर्व विधायक लीला राम, पूर्व विधायक कुलवंत बाजीगर, देवेंद्र पांचाल, प्रवीण प्रजापति, जिला पार्षद मनीष शर्मा, जिला प्रशासन की ओर से डीसी अपराजिता, एडीसी डा. सुशील कुमार, डीएमसी कपिल शर्मा, सीईओ जिला परिषद सुरेश राविश, एमडी शुगर मिल कृष्ण कुमार, गुहला एसडीएम कैप्टन प्रमेश सिंह, सीटीएम गुरविंद्र सिंह, डीआईपीआरओ नसीब सिंह सैनी सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

एंटी नारकोटिक सैल द्वारा खेड़ी गुलाम अली से नशा तस्कर काबू

2 किलो 600 ग्राम गांजा फूल पत्ती बरामद

एसबी ब्यूरो प्रमुख/निर्मल कुमार

कैथल। एक तरफ जहां पर एसपी उपासना के आदेशानुसार जिला पुलिस द्वारा नशा ना करने बारे आमजन को जागरूक किया जा रहा है, वहीं पर पुलिस द्वारा नशा तस्करों पर लगातार शिकंजा कसा जा रहा है। इसी कड़ी में एंटी नारकोटिक सैल द्वारा गांव खेड़ी गुलाम अली से एक आरोपी को 2 किलो 600 ग्राम गांजा फूल पत्ती सहित काबू कर लिया गया।

पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि एंटी नारकोटिक सेल प्रभारी एसआई राजकुमार की अगुवाई में एसआई बलराज सिंह की टीम गश्त दौरान गांव खेड़ी गुलाम अली क्षेत्र में मौजूद थी। सहयोगी सुत्रो से पुलिस को एक गुप्त जानकारी मिली कि गांव खेड़ी गुलाम अली निवासी विक्रम काफी समय से नशीला पदार्थ गांजा फुल पत्ती बेचने का काम करता है। जो गांजा फुस पत्ती बेचने के लिए कही जाने वाले है, उसके मकान पर दबिश देकर उसे काबू किया जा सकता है। सूचना विश्वसनीय होने कारण पुलिस टीम द्वारा मुस्तैदी का परिचय देते हुए विक्रम उपरोक्त के मकान पर दबिश देकर संदिग्ध खेड़ी गुलाम अली निवासी विक्रम को उसके मकान के पास गली से काबू कर लिया गया। नियमानुसार कार्रवाई उपरांत डीएसपी गुरविंद्र सिंह के समक्ष ली गई तलाशी दौरान आरोपी के कब्जे में एक बैग अंदर रखे पॉलीथिन से 2 किलो 600 ग्राम गांजा फुल पत्ती बरामद हुई। आरोपी के खिलाफ थाना सीवन में मामला दर्ज करके मौके पर पहुंचे एएसआई जगभान द्वारा आरोपी विक्रम को गिरफ्तार कर लिया गया। आरोपी वीरवार को अदालत मे पेश किया जाएगा, जिससे पूछताछ की जा रही है।

कैथल पुलिस का नशा जागरूकता अभियान लगातार जारी

एसबी ब्यूरो प्रमुख/निर्मल कुमार

कैथल। नशे से आजादी मुहिम के तहत समाज को नशामुक्त बनाने के उद्देश्य से पुलिस अधीक्षक उपासना के कुशल नेतृत्व एवं निर्देशानुसार कैथल पुलिस द्वारा जिले भर में नशा जागरूकता अभियान निरंतर प्रभावी रूप से चलाया जा रहा है। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य युवाओं को नशे की गिरफ्त से बाहर निकालकर उन्हें स्वस्थ एवं सकारात्मक जीवन की ओर प्रेरित करना है।

इसी क्रम में नशा जागरूकता टीम द्वारा थाना राजौंद, सीवन तथा थाना शहर क्षेत्र में विशेष जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों के दौरान पुलिस टीम ने युवाओं, महिलाओं एवं आम नागरिकों को नशे के दुष्परिणामों के बारे में विस्तार से जानकारी दी तथा नशे से दूर रहने की अपील की।

नशा जागरूकता टीम में शामिल एसआई कर्मबीर, एचसी सुनील कुमार, महिला सिपाही किस्मत व सोनिया, तथा एसपीओ राजपाल, प्रदीप कुमार और जसविंदर ने बताया कि नशा व्यक्ति के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य को गंभीर नुकसान पहुंचाता है, साथ ही पारिवारिक कलह, आर्थिक तंगी एवं अपराध को भी बढ़ावा देता है। उन्होंने उपस्थित लोगों से आग्रह किया कि वे स्वयं नशा न करें और अपने बच्चों व आसपास के युवाओं को भी नशे से दूर रखें। पुलिस टीम द्वारा यह भी बताया गया कि कैथल पुलिस नशा तस्करों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई कर रही है और नशे के कारोबार में लिप्त किसी भी व्यक्ति को बख्शा नहीं जाएगा।

आमजन से अपील की गई कि यदि उन्हें अपने क्षेत्र में नशा तस्करी या नशे से संबंधित कोई भी गतिविधि दिखाई दे तो उसकी सूचना तुरंत नजदीकी थाना या पुलिस कंट्रोल रूम को दें। कैथल पुलिस ने विश्वास दिलाया कि नशा मुक्त समाज के निर्माण के लिए इस प्रकार के जागरूकता कार्यक्रम भविष्य में भी लगातार जारी रहेंगे, ताकि जिले को सुरक्षित, स्वस्थ एवं अपराध मुक्त बनाया जा सके।

अटल जयंती पर हरियाणा के 250 गांवों को मिला ज्ञान का उपहार

अमित शाह ने पंचकुला से किया अटल पुस्तकालयों का लोकार्पण

एसबी विशेष संवाददाता/मदन पुरी

करनाल। भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती की पूर्व संध्या पर हरियाणा के 250 गांवों को अटल पुस्तकालयों का ऐतिहासिक उपहार मिला। इन पुस्तकालयों का लोकार्पण केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की उपस्थिति में पंचकुला से किया। यह पहल ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, अध्ययन और डिजिटल ज्ञान को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है।

करनाल जिले के राहड़ा गांव में स्थित अटल पुस्तकालय के लोकार्पण समारोह में हरियाणा ग्रामीण विकास संस्थान के निदेशक डॉ. वीरेंद्र सिंह चौहान मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने बताया कि पंचायत मंत्रालय द्वारा प्रदेश में लगभग एक हजार ग्रामीण ई-पुस्तकालय स्थापित करने की योजना शुरू की गई थी, जिनमें से 250 पुस्तकालयों का निर्माण लगभग 34 करोड़ रुपये की लागत से पूरा कर लिया गया है। अब इन पुस्तकालयों को संचालन के लिए संबंधित ग्राम पंचायतों को सौंप दिया गया है।

डॉ. चौहान ने बताया कि प्रत्येक अटल पुस्तकालय के संचालन के लिए सरपंच की अध्यक्षता में एक प्रबंधन समिति गठित की जाएगी। इस समिति में गांव में निवास कर रहे सेवानिवृत्त शिक्षाविदों और स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधियों को शामिल करने का भी प्रावधान है, ताकि पुस्तकालय केवल भवन न बनकर गांव के ज्ञान, संवाद और संस्कार के केंद्र के रूप में विकसित हो सकें। उन्होंने कहा कि ये पुस्तकालय ग्रामीण युवाओं को अध्ययन, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी और डिजिटल शिक्षा से जोड़ने में सहायक सिद्ध होंगे और ग्राम स्वराज की परिकल्पना को साकार करने में अहम भूमिका निभाएंगे।

हरियाणा ग्रंथ अकादमी के पूर्व उपाध्यक्ष रहे डॉ. चौहान ने बताया कि ग्रामीण क्षेत्रों में पुस्तकालयों की स्थापना को जन-आंदोलन का स्वरूप देने के लिए वे पिछले डेढ़ दशक से निरंतर सक्रिय हैं। उन्होंने बताया कि प्रदेश में ई-पुस्तकालयों की शुरूआत तत्कालीन मुख्यमंत्री मनोहर लाल के कार्यकाल में हुई थी, जब पहली बार लाभ में आई बिजली कंपनियों ने कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी के अंतर्गत सामाजिक कार्यों के लिए मार्गदर्शन मांगा। इसी दौरान डॉ. चौहान के मार्गदर्शन में अनेक गांवों में निगमों द्वारा सरदार पटेल पुस्तकालयों की स्थापना की गई। बाद में इस विचार को विकास एवं पंचायत विभाग ने आगे बढ़ाते हुए राज्यव्यापी अभियान का रूप दिया।

डॉ. चौहान ने बताया कि पुस्तकालयों के निर्माण के लिए नए भवन खड़े करने के बजाय गांवों में पहले से मौजूद अनुपयोगी और जर्जर सामुदायिक भवनों अथवा अप्रयुक्त स्कूली कमरों की पहचान की गई। इन भवनों की मरम्मत कर उन्हें आधुनिक पुस्तकालयों में परिवर्तित किया गया है, जहां कंप्यूटर, ब्रॉडबैंड इंटरनेट और डिजिटल अध्ययन की सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। इस पहल से वर्षों से अनुपयोगी पड़ी सरकारी परिसंपत्तियां अब ग्राम समुदाय के उपयोग में लाई जा रही हैं और गांवों में ज्ञान व अध्ययन के नए केंद्र विकसित हो रहे हैं।

पीएम विश्वकर्मा योजना से कारीगरों और शिल्पकारों के हुनर को मिल रही नई पहचान: उत्तम सिंह

एसबी विशेष संवाददाता

करनाल। उपायुक्त उत्तम सिंह ने कहा कि शिल्पकार व कारीगर समाज के नवनिर्माण में अपना बहुमूल्य सहयोग देते हैं। शिल्पकारों व कारीगरों के हुनर को सम्मान देते हुए केंद्र सरकार की ओर से पीएम विश्वकर्मा योजना चलाई जा रही है, जिससे उनके हुनर को पहचान मिल रही है।

उपायुक्त उत्तम सिंह ने बताया कि पीएम विश्वकर्मा योजना भारत की पारंपरिक कला और शिल्पकला को जीवित रखने और देश के कारीगरों और शिल्पकारों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने में सहायक है। पीएम विश्वकर्मा योजना का मुख्य लक्ष्य कारीगरों और शिल्पकारों के उत्पादों की पहुंच को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक बढ़ावा देना और उनकी गुणवत्ता में सुधार लाना है। इसके साथ ही यह सुनिश्चित करना कि वे घरेलू और वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं के साथ एकीकृत हों। यह योजना पूरे ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के कारीगरों और शिल्पकारों को सहायता प्रदान करती है। पात्र आवेदक कॉमन सर्विस सेंटर (सीएससी) पर जाकर मोबाइल सत्यापन और आधार ई-केवाईसी के माध्यम से पीएम विश्वकर्मा योजना पोर्टल पर पंजीकरण करके पीएम विश्वकर्मा योजना के लिए आवेदन कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि योजना के तहत 18 विभिन्न प्रकार के पारंपरिक व्यवसायों को शामिल किया गया है, जिनमें नाव बनाना, शस्त्राकार, लुहार, हथौड़ा व लोहे के औजार बनाना, ताला बनाना, सुनार, कुंभकार, मूर्तिकार, मोची, राजमिस्त्री, टोकरी, सुथार, चटाई बनाना, गुडिया व खिलौने बनाना, बारबर, धोबी, दर्जी और मछली पकडने. के लिए जाल बनाने का काम आदि शामिल है। उन्होंने योजना के पात्र सभी कारीगरों को आह्वान किया कि वे तुरंत इस योजना को लेकर अपना रजिस्ट्रेशन करें और लाभ उठाएं।

उपायुक्त उत्तम सिंह ने कहा कि पीएम-विश्वकर्मा योजना के तहत श्रमिक की बेटी के लिए जो कॉलेज पढ़ती है, उसको इलेक्ट्रिक स्कूटी के लिए 50 हजार रूपए तथा श्रमिक को साइकिल खरीदने के लिए पांच हजार रुपए दिए जाते हैं। इसी प्रकार से महिला श्रमिक को सिलाई मशीन खरीदने के लिए 4500 रुपए, श्रमिक के स्कूल जाने वाले बच्चों को 9वीं तथा 10वीं और आईटीआई व डिप्लोमा के विद्यार्थियों को 10 हजार रुपए दिए जाते हैं।

पत्रकार के भाई का निधन, शोक

एसबी ब्यूरो

मंसूरचक। प्रखंड क्षेत्र के समसा निवासी एक हिन्दी दैनिक के पत्रकार आशीष भूषण दत्त झा के छोटे भाई अनिकेत भूषण उर्फ गुड्डू का बीती रात हार्ट अटैक से निधन हो गया। उनके निधन की खबर मिलते ही पूरे क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई है। घटना के संबंध मे आशीष भूषण दत्त झा ने बताया की देर रात अचानक सीने में तेज दर्द की शिकायत के बाद उनकी तबीयत बिगड़ गई। आनन-फानन में उन्हें इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। मृतक सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। आशीष भूषण ने बताया कि एक महीने पूर्व ही उनकी शादी हुई थी। वे सामाजिक कार्यों में बढ़ चढ़कर रुचि लेते थे। मुखाग्नि पत्रकार आशीष भूषण ने किया। उनके निधन पर पत्रकार रवि शंकर कुमार गुड्डू, पंकज कुमार झा, मिन्टू कुमार झा, रितेश कुमार झा, रितेश रंजन, अजीत कुमार झा, आनंद जायसवाल, अशोक ठाकुर आदि ने शोक संवेदना व्यक्त की है।

मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने जनवरी से मुख्यमंत्री स्वास्थ्य योजना शुरू करने की दी मंजूरी

एसबी संवाददाता/चंडीगढ़। पंजाब के निवासियों के लिए नए साल के तोहफे के रूप में मुख्यमंत्री स भगवंत सिंह मान ने आज स्वास्थ्य विभाग को जनवरी माह से मुख्यमंत्री स्वास्थ्य योजना शुरू करने की मंजूरी दे दी है। इस योजना के तहत राज्य के प्रत्येक परिवार को 10 लाख रुपये तक का नकद-रहित इलाज सुनिश्चित किया जाएगा। यहां स्वास्थ्य विभाग की बैठक की अध्यक्षता करते हुए मुख्यमंत्री स भगवंत सिंह मान ने कहा कि मुख्यमंत्री स्वास्थ्य बीमा योजना की शुरूआत राज्य के लोगों को बिना एक भी पैसा खर्च किए व्यापक स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने कहा, यह योजना विश्व-स्तरीय स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने और लोगों को 10 लाख रुपये तक का नकद-रहित इलाज सुनिश्चित करने के उद्देश्य से सरकार द्वारा शुरू की गई एक ऐतिहासिक पहल है। पंजाब देश का पहला ऐसा राज्य होगा, जहां हर परिवार को 10 लाख रुपये तक का नकद-रहित इलाज मिलेगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि मुख्यमंत्री स्वास्थ्य योजना पंजाब सरकार की एक प्रमुख योजना है, जिसका उद्देश्य राज्य के सभी पात्र निवासियों को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं के लिए वित्तीय सुरक्षा और आसान पहुंच प्रदान करना है। उन्होंने कहा, यह योजना सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज की दिशा में एक अहम कदम है, जिसके अंतर्गत प्रत्येक नामांकित परिवार प्रति वर्ष 10 लाख रुपये तक का नकद-रहित चिकित्सकीय उपचार प्राप्त कर सकेगा। मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने कहा कि इस योजना के तहत स्वास्थ्य सेवाओं तक सभी निवासियों की आसान पहुंच सुनिश्चित की गई है। इसके अंतर्गत पंजाब और चंडीगढ़ के सूचीबद्ध सरकारी एवं निजी अस्पतालों के व्यापक नेटवर्क में गंभीर बीमारियों, बड़ी सर्जरी, आईसीयू, क्रिटिकल केयर और जीवन-रक्षक उपचार की सुविधा उपलब्ध होगी।